हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

Mkd ii thdj.k l i[;k ,p-ih-@42@,l-,e-,y- 2009 lkIrkfgd vkj-,u-vkbZ- 32195@78

o"kZ 31 vd 51 f'keyk] 23&29 fl rEcj] 2009 gj c/kokj dks çdkf'kr eY; % ,d ifr 3-00 #i;s okf"kZd 140 #i;s vkthou 1500 #i;s website : himachalpr.gov.in/giriraj.asp

घर बैठे गिरिराज पाइये

गिरिराज का आजीवन ग्राहक बनने के लिए सदस्यता शुल्क 1500 **रुपये** बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर के माध्यम से **निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क, शिमला**-2 व वार्षिक सदस्य बनने के लिए सदस्यता शुल्क 140 **रुपये, सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, शिमला**-171005 के नाम से भेजें।

ir e fiu dkM ,o

njHkk"k ;k ekckby u- fy[kuk u Hkwy

इस अंक में

कृषि/बागबानी/विकास...	5
आस्था/संस्कृति/विविध...	6
विविध...	7
साहित्य...	8
महिला/बाल जगत/स्वास्थ्य ...	9
पहाड़ी पृष्ठ	10

स्टेट ऑफ स्टेट्स अवार्ड–2009

सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए हिमाचल पुरस्कृत

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों नई दिल्ली में इंडिया टुडे समूह द्वारा आयोजित 'स्टेट ऑफ द स्टेट्स' समारोह में केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी से प्रदेश के लिए सात प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त किए । हिमाचल को 'फास्टेस्ट मूवर' श्रेणी में ओवरऑल परफारमेंस, पूंजी निवेश व मैक्रो इकॉनमि में सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए पुरस्कृत किया गया जबकि प्रदेश को देश के बड़े राज्यों की श्रेणी में शिक्षा, स्वास्थ्य, पूंजी निवेश तथा बेहतर निवेश पर्यावरण एवं मैक्रो इकॉनमि के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य घोषित किया गया। प्रतिष्ठित साप्ताहिक समाचार पत्रिका इंडिया टुडे द्वारा गत सात वर्षों से भारतीय गणराज्य के प्रत्येक बड़े एवं छोटे राज्यों में विभिन्न विकासात्मक पहलुओं बारे स्वतन्त्र सर्वेक्षण किया जाता है।

इस अवसर पर विभिन्न विषयों पर आयोजित तीन सत्रों में चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने देश में कृषि आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए एक और हरित क्रांति की आवश्यकता है तथा ग्रामीण युवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में ही स्वरोजगार के अवसर सृजित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाएं सृजित कर ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में कृषि तथा शिक्षा दो प्रमुख क्षेत्र हैं, जिन्हें सरकार सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने कहा कि गुणात्मक अधोसंरचना सृजित करने के लिए केन्द्र सरकार के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है, ताकि प्रदेश स्वावलम्बी बन सके। उन्होंने कहा कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सार्वजनिक निजी

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल नई दिल्ली में आयोजित समारोह में केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए

भागीदारी की संभावनाओं का भी पता लगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए नीति निर्धारित करते हुए वास्तविकता को ध्यान में रखा जाना चाहिए, ताकि ऐसे कार्यक्रमों से लक्षित समूह लाभान्वित हो सके।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सड़क अधोसंरचना के सृजन में क्रांति आई है, जो किसी भी प्रदेश के विकास के लिए मूल घटक है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के स्कूलों में शत–प्रतिशत उपस्थिति प्राप्त कर ली है। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी प्रदेश के विद्यार्थी अग्रणी हैं, क्योंकि प्रदेश में उच्च शिक्षा उपस्थिति 20 प्रतिशत है, जो 14 प्रतिशत की राष्ट्रीय औसत से अधिक है।

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश ने निजी क्षेत्र में प्रथम सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय खोल कर एक सफल पहल की है तथा प्रदेश राज्य में गुणात्मक शिक्षण संस्थान खोलने में निजी भागीदारी को प्रोत्साहित कर रहा है, ताकि प्रदेश 'शिक्षा का केन्द्र' बन कर उभर सके।

मंत्रिमण्डल द्वारा बधाई

हिमाचल प्रदेश मंत्रिमंडल ने 'इंडिया टुडे' समूह द्वारा आयोजित 'स्टेट आफॅ स्टेट्स कन्क्लेव' में प्रदेश को 7 पुरस्कार मिलने पर मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल को बधाई दी। मंत्रिमंडल ने कहा कि इससे राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का सम्मान बढ़ा है तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी प्रो. धूमल के गतिशील नेतृत्व में और कीर्तिमान स्थापित होंगे। मंत्रिमंडल ने बैठक में कार्यान्वयन विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपलब्धि के लिए प्रशंसा की तथा पुरस्कार को प्रदेश के लोगों को समर्पित किया।

मुख्य मंत्री ने सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियां अर्जित करने वाले विकसित राज्यों को उदार सहायता प्रदान करने का आग्रह किया, ताकि वे ऊंचे मनोबल से अपनी विकास परियोजनाओं के निष्पादन को जारी रख सकें। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार के सहयोग के बिना प्रदेश सरकार का कोई भी कार्यक्रम अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने देश के सर्वांगीण विकास के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों पर भी बल दिया। उन्होंने वन संरक्षण अधिनियम के उदारीकरण पर भी बल दिया, ताकि विभिन्न विकास गतिविधियों को (शेष पृष्ठ 11 पर)

किसानों के पांच करोड़ के ऋण माफ

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में आयोजित हिमाचल प्रदेश मंत्रिमंडल की बैठक में प्रदेश के 43,485 लघु एवं सीमान्त किसानों के वर्ष 1950 तथा 1960 से संबंधित तक़ावी ऋण (बीज, बैल आदि खरीदने या कष्ट निवारण के लिए किसानों को सरकार द्वारा दिये जाने वाला ऋण) तथा भू–संरक्षण एवं भू–विकास हेतु लिए गए ऋण के अंतर्गत कृषि ऋण की अदायगी को माफ करने का निर्णय लिया है। लघु एवं सीमांत किसानों का यह ऋण 4,95,89,019 रुपये (जुलाई 2009 तक मूलधन 2,10,821,133.57 तथा ब्याज 2,85,06,885.78 रुपये) बनता है। मंत्रिमंडल ने प्रदेश में एमरजैंसी मेडिकल रिस्पॉंस एण्ड ट्रासपोर्टेशन (ई.एम.आर. एण्ड टी) प्रणाली को आरंभ करने को अपनी स्वीकृति प्रदान की जिसके लिए समिति का गठन किया जा रहा है तथा सफल निविदादाताओं द्वारा 'स्पेशल पर्पज व्हीकल' को अनुबंध के आधार पर स्थापित किया जाएगा। प्रदेश भर में उपयुक्त स्थानों पर 100 से 150 एम्बुलैंस का नेटवर्क स्थापित किया जाएगा तथा आवश्यक सूचना प्रौद्योगिकी हार्डवेयर एवं सॉटवेयर के साथ एमरजैंसी रिस्पॉंस सेंटर स्थापित किया जाएगा, जो इस प्रणाली के सफल कार्यान्वयन में सहयोग करेगा। इस परियोजना पर 20 करोड़ रुपये व्यय होंगे तथा 15 करोड़ रुपये वार्षिक तौर पर व्यय होने का अनुमान है। मंत्रिमंडल ने बिलासपुर जिले के बरमाणा में गग्गल सीमेंट वर्क्स में ए.सी.सी. लिमिटेड द्वारा 8 मेगावॉट विद्युत उत्पादन को स्वीकृति प्रदान की, जो 71 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित गग्गल–1 तथा गग्गल–2 की 'किन–प्रिहीटर एवं कूलर एग्जॉस्ट गैसिस' की 'वेस्ट हीट रिकवरी सिस्टम' पर आधारित होगी। यह प्रणाली पूर्ण रूप से विद्युत अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत होगी। मंत्रिमण्डल ने जवाहर लाल नेहरु राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन के अंतर्गत बसों को चलाने के लिए शहरी परिवहन प्रबंधन समिति के गठन को भी अपनी स्वीकृति प्रदान की, जो हिमाचल प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की देखरेख में कार्य करेगी। मंत्रिमंडल ने प्रदेश के प्रत्येक 100 स्कूलों में छठी से आठवीं कक्षा तक ऊर्दू तथा पंजाबी के वैकल्पिक विषयों को आरंभ करने का भी निर्णय लिया है। मंत्रिमण्डल ने यह भी निर्णय लिया है कि पंजाबी तथा ऊर्दू पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों को 250 रुपये का मासिक मानदेय वहां के अध्यापकों को अनुदान दिया जाएगा तथा अन्य जिन स्कूलों में प्रशिक्षित अध्यापक उपलब्ध नहीं हैं, जो इन वैकल्पिक विषयों को पढ़ाने में सक्षम हैं, को 70 रुपये प्रति पीरियड के हिसाब से (शेष पृष्ठ 11 पर)

मंत्रिमण्डल के निर्णय

- **आपात रोगी वाहन सेवा आरम्भ होगी**
- **दंत चिकित्सकों के 64 पद अनुबंध पर भरे जाएंगे**
- **नरेगा योजना के कार्यान्वयन के लिए 87 पद भरे जाएंगे**
- **100 स्कूलों में उर्दू तथा पंजाबी पढ़ाई जाएगी**

हिमाचल के 767 गांव अभयारण्य क्षेत्र से बाहर रखने को मंजूरी

वन मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने गत दिनों शिमला में बताया कि प्रदेश सरकार के कारगर प्रयासों के परिणामस्वरूप केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री श्री जयराम रमेश की अध्यक्षता में हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय वन्य प्राणी बोर्ड की बैठक में हिमाचल प्रदेश के 767 गांवों को अभयारण्य वन्य प्राणी शरण्यस्थलों से बाहर रखने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि यह प्रस्ताव माननीय न्यायालय की सहमति के बाद ही लागू होगा। उन्होंने कहा कि मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने व्यक्तिगत रूप से केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री से भेंट कर इस संबंध में चर्चा की थी।

1.13 लाख जनसंख्या को राहत मिलेगी

श्री नड्डा ने कहा कि वन्य प्राणी शरण्यस्थलियों अभयारण्य के युक्तिकरण के बारे में प्रदेश सरकार के सुझावों पर राष्ट्रीय वन्य प्राणी बोर्ड की एक विशेषज्ञ समिति ने अप्रैल माह में प्रदेश का दौरा किया था तथा प्रदेश सरकार के प्रस्तावों पर सहमति व्यक्त करते हुए अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। इस युक्तिकरण के तहत 767 गांवों की 1.13 लाख जनसंख्या को राहत मिलेगी।

रोहड़ू में सड़कों व पेयजल पर होंगे व्यय 87 करोड़

- **क्षेत्र में वर्षा से हुई क्षति की पूर्ति के लिए एक करोड़**
- **बीस माह में 35 हजार दिहाड़ीदारों व अनुबंध कर्मियों की सेवाएं हुईं नियमित**

प्रदेश सरकार इस वित्त वर्ष के दौरान शिमला जिले के रोहड़ू उपमंडल में सड़कों के निर्माण तथा पेयजल आपूर्ति को सुनिश्चित बनाने पर 87 करोड़ रुपये व्यय करेगी। यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों रोहड़ू के धमवाड़ी में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए दी। इससे पूर्व, उन्होंने 1.28 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निर्मित होने वाली 4.5 कि.मी. लंबे धमवाड़ी–गज्याणी मार्ग का विधिवत् शुभारम्भ किया। मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने गत 20 महीनों के दौरान लगभग 35 हजार दिहाड़ीदारों व अनुबंध कर्मियों की सेवाएं नियमित की हैं तथा रोजगार के व्यापक अवसर सृजित किए हैं। अकेले शिक्षा विभाग में ही 18 हजार पद भरे गये हैं, जिनमें से 10697 कर्मियों को नियुक्ति देकर प्रदेश के ग्रामीण एवं दूर–दराज क्षेत्रों में तैनात किया गया है। उन्होंने कहा कि हाल ही में प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा 650 कॉलेज केडर प्रवक्ताओं की संस्तुति की गई है, जिन्हें प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयों में तैनात किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य में आगामी वर्षों में उच्च शिक्षा संस्थानों में 50 प्रतिशत उपस्थिति के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है जबकि वर्तमान में 20 प्रतिशत उपस्थिति के साथ प्रदेश को देश का अग्रणी राज्य आंका गया है।

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान को सुनिश्चित बनाने के लिए ग्रामीण सशक्तिकरण योजनाओं को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि 353 करोड़ रुपये की महत्त्वाकांक्षी पं. दीनदयाल किसान बागबान समृद्धि योजना प्रगतिशील किसानों के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

मुख्य मंत्री ने समस्त घाटी में वर्षा के कारण हुए नुकसान की भरपाई के लिए एक करोड़ रुपये तथा राजकीय उच्च पाठशाला चिलाला के भवन के लिए 5 लाख रुपये प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार लोगों की सभी न्यायोचित विकासात्मक एवं अन्य मांगों को पूरा करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देगी। इससे पूर्व, मुख्य मंत्री ने राजकीय महाविद्यालय सीमा में 1.95 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित तथा 105 छात्राओं को (पृष्ठ एक का शेष)

सचमुच हीरा है हिमाचल

सबसे ऊपर हिमाचल

सबसे ऊपर हिमाचल

बेस्ट बिग स्टेट

1. शिक्षा
2. स्वास्थ्य
3. पूंजी निवेश
4. मैक्रो इकोनॉमी

फास्टेस्ट मूवर

5. ओवरऑल परफारमेंस
6. पूंजी निवेश
7. मैक्रो इकोनॉमी

स्टेट ऑफ स्टेट्स अवार्ड - 2009

सात पुरस्कार प्राप्त कर हिमाचल सर्वश्रेष्ठ

“स्टेट ऑफ स्टेट्स अवार्ड में हिमाचल प्रदेश ने सात पुरस्कार प्राप्त कर मिसाल कायम की है. इसका श्रेय समस्त हिमाचलवासियों को है जिनके सतत् सहयोग से प्रदेश नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है. मैं इस उपलब्धि पर समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई देता हूँ”.

-प्रेम कुमार धूमल
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

जारीकर्ता : सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भुट्टी का शताब्दी समारोह

सुरंग से जुड़ेंगे कुल्लू व जोगेंद्रनगर–प्रो. धूमल

कुल्लू जिले की लग घाटी को जोगिन्द्रनगर से जोड़ने के लिए सिल्ह-बधाणी-भूभू-जोत सुरंग का निर्माण किया जाएगा, जिससे इन दोनों क्षेत्रों की दूरी 63 किलोमीटर कम हो जाएगी।

यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों कुल्लू ज़िले के लग घाटी क्षेत्र में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भुट्टी के शताब्दी समारोह के अवसर पर संबोधित करते हुए दी।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल कुल्लू जिले के लग घाटी में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भुट्टी के शताब्दी समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए

मुख्य मंत्री ने कहा कि राज्य के विभिन्न स्थानों पर तीन प्रमुख सुरंगों का निर्माण प्रस्तावित है। उन्होंने कहा कि होली-उत्तराला सुरंग का निर्माण कर चम्बा ज़िला के होली क्षेत्र को कांगड़ा ज़िले के बैजनाथ से जोड़ा जाएगा। कुल्लू जिला के सिल्ह-बधाणी-भभू-जोत को जोगिन्द्रनगर क्षेत्र तथा ऊना जिला में बंगाणा सुरंग के निर्माण से इन क्षेत्रों के बीच दूरियों को कम कर बारहमासी यातायात सुविधा उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश की इन तीनों प्रमुख सुरंगों के निर्माण के लिए पूर्व व्यवहारिकता रिपोर्ट तैयार की जा रही है ताकि इन परियोजनाओं का कार्य शीघ्र आरम्भ किया जा सके।

प्रो. धूमल ने कहा कि स्वतंत्र ऊर्जा निष्पादकों को परियोजना क्षेत्रों के विकास में भागीदार बनाया जाएगा ताकि वे परियोजना से प्रभावित लोगों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान में अपना योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि प्रदेश में वर्ष 2012 तक 12 हजार मेगावाट जल विद्युत उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जबकि प्रदेश में अब तक लगभग 6 हजार मैगावाट जल विद्युत उत्पादन हुआ है।

मुख्य मंत्री ने कहा कि स्थानीय सड़क परियोजनाओं का कार्य निष्पादन प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा, जिसमें से चार परियोजनाओं के तहत निर्माण कार्य निकट भविष्य में लगभग 5 करोड़ रुपये लागत से शुरू किया जाएगा। उन्होंने लोगों का आहवान किया कि वे सड़क निर्माण के लिए स्वेच्छा से भूमि प्रदान करें तथा इस कार्य के लिए धन अभाव को आड़े नहीं आने दिया जाएगा।

उन्होंने घाटी में पुलों के निर्माण के लिए आठ लाख रुपये व स्थानीय पुलों को सुदृढ़ करने के लिए 3.20 लाख रुपये की घोषणा करते हुए कहा कि क्षेत्र में अन्य सड़क परियोजनाओं के लिए 4.96 करोड़ रुपये प्राप्त करने के प्रयास किए जाएंगे।

उन्होंने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भुट्टी में विज्ञपन प्रयोगशाला के लिए 60 लाख रुपये तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए 20 हजार रुपये देने की घोषणा की।

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार ने इस वित्त वर्ष में शिक्षा क्षेत्र के बजट प्रावधान में 142 प्रतिशत की वृद्धि कर शिक्षा के विस्तार एवं प्रोत्साहन गतिविधियों के लिए 2000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में एक आदर्श राज्य बन कर उभरा है तथा गत दिन नई दिल्ली में इंडिया टूडे पत्रिका द्वारा आयोजित राष्ट्र स्तरीय सम्मान समारोह में प्रदेश को श्रेष्ठ राज्य आंका गया है।

प्रो. धूमल ने कहा कि किसी भी संस्था द्वारा अपने अस्तित्व के 100 वर्ष की अवधि पूरी करना अपने आप में एक गौरव का विषय है। इस अवधि के दौरान संस्था से शिक्षा ग्रहण कर लाखों विद्यार्थी सम्बन्धित क्षेत्रों में प्रदेश एवं संस्था का नाम रोशन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में बहुत कम ऐसे शिक्षण संस्थान होंगे, जिन्होंने अपने अस्तित्व के 100 वर्ष पूरे किए हों। उन्होंने स्कूल के शिक्षारत एवं पूर्व विद्यार्थियों तथा अध्यापक वर्ग को संस्था द्वारा 100 वर्ष पूरा करने के लिए बधाई दी। उन्होंने स्कूल में निःस्वार्थ भाव से विद्यार्थियों को शिक्षा देकर आदर्श स्थापित करने वाले स्व. दुगलू राम को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने स्कूल के पूर्व विद्यार्थी रह चुके 100 वर्षीय श्री हुकम राम नेगी को भी सम्मानित किया तथा उनके स्वस्थ जीवन की कामना की।

मुख्य मंत्री ने स्कूल के पुराने विद्यार्थियों तथा अध्यापकों एवं स्कूल का नाम रोशन करने वालों को भी सम्मानित किया। उन्होंने स्कूल की शताब्दी वर्ष आयोजन समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया।

विधायक श्री गोविन्द ठाकुर ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए सिल्ह-बधाणी-भभू-जोत सुरंग के निर्माण की घोषणा के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि घाटी की सभी सड़क परियोजनाओं तथा लग घाटी सड़क का विस्तार कार्य का कार्य शीघ्र आरम्भ किया जाएगा। उन्होंने वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला में अतिरिक्त भवन सुविधा के लिए धन उपलब्ध करवाने का आग्रह किया।

इससे पूर्व, वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भुट्टी की प्रधानाचार्य श्रीमती वी. डोलमा ने स्कूल की उपलब्धियों की जानकारी दी।

विधायक एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री खीमी राम शर्मा, आनी के विधायक श्री किशोरी लाल सागर, पूर्व मंत्री श्री कुंज लाल ठाकुर, पूर्व सांसद श्री सुरेश चंदेल, पूर्व विधायक श्री चन्द्रसेन ठाकुर, जिला कुल्लू भाजपा मण्डल के अध्यक्ष श्री राम सिंह सहित क्षेत्र के अन्य गण मान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

राज्यपाल ने किया चाबा पावर हाउस का दौरा

राज्यपाल श्रीमती प्रभा राव ने गत दिनों शिमला से 50 किलोमीटर दूर सुन्नी के निकट 100 वर्ष पुराने 1.75 मेगावाट क्षमता के चाबा पावर हाउस का दौरा किया। इस पावर हाउस का निर्माण कार्य वर्ष 1909 में ब्रिटिश शासन के दौरान आरम्भ हुआ था तथा वर्ष 1912 में बिजली उत्पादन शुरू हुआ। प्रदेश में अन्य दो और धरोहर विद्युत घरों में से एक चम्बा में भूरि सिंह पावर हाउस तथा दूसरा मण्डी जिला में शानन पावर हाउस है। इन दोनों विद्युत घरों का निर्माण कार्य भी तत्कालीन ब्रिटिश शासन के दौरान ही किया गया था।

राज्यपाल को अवगत करवाया गया कि 1.75 मेगावाट क्षमता के चाबा पावर हाउस का निर्माण 13 लाख रुपये की लागत से किया गया था तथा वर्ष 1913-14 में इसमें पूर्ण रूप से उत्पादन कार्य शुरू किया गया। श्रीमती राव ने इस पावर हाउस के बेहतर रख-रखाव के लिए अभियन्ताओं के योगदान की सराहना की।

इससे पूर्व राज्यपाल ने सुन्नी क्षेत्र की सकरोली पंचायत के लोगों की समस्याओं को भी सुना।

वनों को आग से बचाने के लिए प्रभावी पग उठाए जाएंगे

प्रदेश सरकार राज्य के हरित आवरण को संरक्षण प्रदान करने तथा प्रदेश के वनों को आग से बचाने के लिए वन अग्नि प्रबंधन के क्षेत्र में मध्य प्रदेश की तर्ज पर कार्य करेगी।

यह जानकारी वन मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने गत दिनों शिमला में वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक को संबोधित करते हुए दी।

श्री नड्डा ने कहा कि प्रदेश के कुछ भागों में वनों की आग के कारण करोड़ों रुपये की वन सम्पदा एवं वन्य प्राणियों की क्षति होती है। उन्होंने कहा कि अक्तूबर माह में वन अरण्यपालों एवं वन मण्डलाधिकारियों की बैठक आयोजित की जाएगी, जिसमें आगामी गर्मी के मौसम में वनों की आग को रोकने के लिए रणनीति को अंतिम रूप दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि सांझा वन संजीवनी योजना, अपना वन-अपना धन, पीपल बरगद तथा वन सरोवर जैसी नयी योजनाओं का नियमित अनुश्रवण सुनिश्चित बनाया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों का कार्यान्वयन सुनिश्चित बनाएं।

इससे पूर्व, अतिरिक्त मुख्य सचिव, वन श्री अवय शुक्ला ने मंत्री का स्वागत करते हुए महत्वपूर्ण निर्णयों एवं प्रगति का विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत किया।

प्रधान मुख्य वन अरण्यपाल श्री विनय टंडन ने विभाग के कार्यों के पूर्ण कम्प्यूटरीकरण का आश्वासन दिया ताकि विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही सभी गतिविधियों का प्रभावी अनुश्रवण सुनिश्चित बनाया जा सके।

हमीरपुर जिले में स्थापित होंगे 663 पॉली हाउस

कृषि आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए राज्य में 353 करोड़ रुपये की पंडित दीन दयाल किसान-बागबान समृद्धि योजना आरंभ की है।

यह जानकारी कृषि एवं बागबानी सचिव, राम सुभग सिंह ने गत दिनों हमीरपुर में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए दी।

राम सुभग सिंह ने बताया कि योजना के प्रथम चरण में 155 करोड़ रुपये की लागत से पॉली हाउस स्थापित कर कृषि पैदावार में विविधिता लाकर पैदावार को बढ़ाने के लिए अगले तीन वर्षों में 16,500 पॉली हाउस तथा 12,320 स्प्रिंकल स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। पॉली हाउस स्थापित करने के लिए 80 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। इस योजना के तहत 2650 पानी के टैंकों का निर्माण किया जाएगा। टैंकों के लिए किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। योजना के प्रथम चरण में 10 हजार रोजगार के अवसर पैदा होंगे। सब्जी उत्पादन में भी 10 गुणा तक वृद्धि संभावित है। इसी योजना के दूसरे चरण में 198 करोड़ रुपये की लागत से सूक्ष्म सिंचाई द्वारा कृषि विविधता पर बल दिया जाएगा। उन्होंने इस अवसर पर योजना के अन्य पहलुओं कृषि तथा बागबानी में किए जा रहे अन्य उपायों तथा क्रियान्वित की जा रही योजनाओं के बारे में बताया।

उन्होंने इस अवसर पर जिला के 6 विकास खंडों में क्रियान्वित की जा रही पंडित दीन दयाल किसान-बागबान समृद्धि योजना की समीक्षा भी की। उहोंने बताया कि ज़िला में 7.06 हेक्टेयर भूमि पर 663 पॉली हाउस लगाए जाएंगे। अभी तक 386 आवेदन प्राप्त हुए हैं। उन्होंने बताया कि 340 पॉली हाउसिस, 223 सूक्ष्म सिंचाई तथा 49 पेयजल स्रोतों के मामलों को मंजूरी दी जा चुकी है।

इस अवसर पर उपायुक्त अभिषेक जैन ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें भू-जल स्तर उन्नत करने के लिए प्रयास करने होंगे अन्यथा आने वाले समय में हमें दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

महंगाई पर काबू पाने के लिए कड़े कदम

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्री श्री रमेश धवाला ने कहा कि प्रदेश सरकार बढ़ती मंहगाई पर काबू पाने के लिए कड़े कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में बाहर से खुले बाजार में आने वाली चीनी पर नियंत्रण रखने के लिए अधिसूचना जारी की गई है। अधिसूचना के अनुसार जो भी व्यापारी 20 क्विंटल से ज्यादा चीनी का स्टॉक अपने प्राधिकृत गोदामों में रखना चाहेगा, उसे विभाग से लाइसेंस प्राप्त करना होगा। उसे विभाग को पाक्षिक (प्रत्येक 15 दिन के बाद) रूप में यह भी सूचित करना होगा कि उनके पास चीनी का कितना स्टॉक प्राप्त हुआ, कितना स्टॉक इस अवधि में बेचा गया और कितना स्टॉक बकाया बचा है। श्री धवाला ने बताया कि इसी तरह से चावल, खाद्य तेल और सभी प्रकार की दालों के लिए लाईसेंस प्रावधान किया गया हैं तथा सरकार द्वारा इन प्रावधानों को लागू करवाने के लिए खुले बाजार पर कड़ी नज़र रखी जा रही है। श्री धवाला ने व्यापारियों को उनके प्राधिकृत व्यापारिक परिसरों पर मूल्य एवं स्टॉक सूची लगाना सुनिश्चित करने को कहा है। उन्होंने विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि लगातार बढ़ रही मंहगाई को रोकने के लिए सरकार द्वारा उठाए जा रहे इन कदमों को कड़ाई से लागू करना सुनिश्चित बनाएं।

अक्षम बच्चों को सक्षम बनाने के लिए एकजुटता से कार्य करने का आह्वान

स्वपरायणता प्रमस्तिक आघात, राष्ट्रीय न्यास की अध्यक्ष श्रीमती पूनम नटराजन ने समाज के सभी वर्गों से मंद बुद्धि एवं शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को सक्षम बनाने के लिए एकजुटता से कार्य करने का आहवान किया है।

श्रीमती नटराजन गत दिनों शिमला में स्वयं सेवी संस्था, 'उड़ान' द्वारा आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहीं थी। यह कार्यशाला एक सतत् पुनर्स्थापन शिक्षण कार्यक्रम है, जिसका आयोजन 0-6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को लक्षित कर आरम्भ किया गया है। श्रीमती नटराजन ने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य अक्षम बच्चों को स्कूल जाने के योग्य बनाने के लिए प्रशिक्षित श्रम शक्ति तैयार करना है। इससे विकलांग बच्चों की बीमारी की पहचान तथा उनका शीघ्र उपचार कर उन्हें सामान्य बच्चों की तरह उचित समय पर स्कूल भेजा जा सकेगा। उन्होंने कहा कि कार्यशाला को पहली बार शिमला में आयोजित किया गया है। उन्होंने बताया कि ऐसे बच्चों को समुचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है तथा प्रशिक्षण के माध्यम से इनके लिए अवसर पैदा किए जा सकते हैं। 'वॉयस एण्ड विज़न' मुम्बई की निदेशक श्रीमती रीना भण्डारी ने कहा कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अपंगता के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों को जरूरतंद बच्चों तक पहुंचाना है, जिसके लिए कुशल एवं प्रशिक्षित श्रमशक्ति का होना जरूरी है। श्रीमती प्रभा राजीव ने प्रदेश सरकार द्वारा विकलांग लोगों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार द्वारा सरकारी सेवा में अक्षम व्यक्तियों के लिए तीन प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में शीघ्र ही अपंग व्यक्तियों के लिए नीति तैयार की जाएगी।

सरकारी सेवाओं में अक्षम व्यक्तियों को तीन प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान

'उड़ान' के अध्यक्ष श्री एच.आर.हीर ने श्रीमती पुनम नटराजन तथा अन्यों का स्वागत करते हुए संस्था की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में प्रदेशभर की स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि कार्यशाला के दौरान मानसिक एवं शारीरिक विकलांगता से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किए जाएंगे।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

मस्तिष्क स्वयं अपने में ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में बदल सकता है।
-मिल्टन

हिमाचल प्रदेश सर्वश्रेष्ठ राज्य

हिमाचल प्रदेश को एक प्रतिष्ठित पत्रिका द्वारा अपने 'स्टेट ऑफ दी स्टेट्स' सर्वे में सर्वश्रेष्ठ राज्य पाया गया है। यह प्रदेशवासियों के लिए प्रसन्नता का विषय है। नई दिल्ली में आयोजित स्टेट ऑफ द स्टेट्स समारोह में मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी से प्रदेश के लिए सात अवार्ड प्राप्त किये। इस पर्वतीय राज्य को सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए 'फॉस्टेस्ट मूवर स्टेट' का अवार्ड प्राप्त हुआ है। इस सफलता का श्रेय प्रदेश सरकार की दूरगामी कल्याणकारी नीतियों तथा राजनीतिक प्रतिबद्धता को जाता है, जिस कारण इस राज्य ने विकास की बुलन्दियों को छुआ है। हिमाचल प्रदेश ने जो यह उपलब्धि हासिल की है वह एक मिसाल है। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद हिमाचल का सर्वश्रेष्ठ राज्य बनना अपने आपमें एक बड़ी उपलब्धि है। पन बिजली, वन, उद्योग, बागबानी, सड़क निर्माण आदि क्षेत्रों में हो रहे विकास से यहां की आय में बढ़ोतरी हुई है। प्रदेश की कृषि एवं बागबानी आर्थिकी में आशातीत बदलाव आ रहा है। किसानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने की दिशा में सरकार द्वारा प्रभावी कदम उठाये जा रहे हैं। इसी वर्ष 353 करोड़ रुपये की पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसान बागबान समृद्धि योजना आरम्भ की गई है जिसमें कृषि उपदान में विविधता पर विशेष बल दिया गया है। इससे किसानों की आर्थिकी में आशातीत बदलाव आएगा। शिक्षा के क्षेत्र में हो रही प्रगति तथा सरकार के इस दिशा में निरंतर प्रयासों से हिमाचल प्रदेश शिक्षा का हब बनने की ओर अग्रसर है। आज प्रदेश में उपलब्ध बेहतर आधारभूत संरचना से वैश्वीकरण के दौर में युवकों को उच्च शिक्षा हासिल हो रही है। इसी तर्ज पर स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी प्रदेश ने बेहतर उपलब्धियां हासिल की हैं। लोगों में जागरूकता का स्तर अधिक होने तथा उन्हें घर-द्वार के निकट बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त होने के परिणामस्वरूप प्रदेश में औसत आयु में वृद्धि हुई है तथा मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी दर्ज की गई है। यहां उपलब्ध कुशल प्रशासन, निवेश मित्र माहौल, निर्बाधित विद्युत आपूर्ति तथा बेहतर कानून व्यवस्था के रहते इस पहाड़ी प्रदेश में निवेशक अपने कदम लगातार बढ़ा रहे हैं। बड़ी संख्या में यहां औद्योगिक इकाइयां स्थापित की जा रही हैं। निजी निवेश से स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर हासिल हो रहे हैं। साथ ही यहां की आर्थिकी सुदृढ़ हो रही है। उद्योगपतियों को आकर्षित करने के लिए सिंगल विंडो की शुरूआत की गई है। पहाड़ी राज्यों में हिमाचल ने जो तरक्की की है वह दूसरे राज्यों के लिए अनुकरणीय है। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने इस सफलता का श्रेय सरकार की दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति तथा नीतियों के साथ- साथ यहां के मेहनतकश लोगों को दिया है।

जीवन-मरण के साथी हैं वृक्ष

जन राय

» धनी राम शर्मा

यह ठीक है कि कवि लिखता है अनुभूति, पीड़ा तथा दूरदर्शिता से। किन्तु व्यवहारिकता में हमें पेड़ को काटना भी पड़ता है। अतः प्राकृतिक सम्पदाओं का सदुपयोग करना अनिवार्य है, परन्तु उसका अति दोहन और दुरुपयोग निश्चित ही दुर्दशाजन्य होता है।

विख्यात विद्वान श्री विद्या निवास मिश्र जी द्वारा लिखित व्यक्ति व्यंजना में अनेक विषयों पर विवेचना करते हुए उन्होंने दुर्वा से लेकर देवदारु तक की मार्मिक चर्चा की है। वह लिखते हैं- 'हिन्दुस्तान एक विचित्र देश है, उसकी पहचान नदी से होती है या वनस्पति से। भारतीय मानस संतान को वासुदेव वृक्ष (पीपल) के रूप में देखता है और कन्या को आंगन की तुलसी के रूप में।' पेड़ की महत्ता बताते हुए वह कदम के पेड़ का जिक्र करते हैं- 'कदम का पेड़ भारत में एक सम्पूर्ण संस्कृति है, केवल पेड़ नहीं है। यह पावस की शोभा है, इस पर कन्हैया की मुरली टेरी जाती है-

मां कदम का पेड़ अगर होता जमुना तीरे।

मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।।'

प्रकृति पुत्र ये पेड़ परमात्मा को भी प्रिय हैं। कदम को सुरद्रुम और देवदारू को देवताओं का पेड़ कहा जाता है। पेड़ पुरुषार्थी होते हैं, अपने पत्ते, फल-फूल, बीज यहां तक कि अपना तना और जड़ों तक परहिताये दधिची की तरह सहर्ष न्योछावर कर देते हैं। वे हमें जीवन भर पोषित करते हैं और मृत्यु पर्यन्त भी मृत शरीर संग जल जाते हैं। पेड़ सा सच्चा साथी भला और कौन होगा? परन्तु आज का मानव समाज पेड़ों के प्रति क्या कृतघन्ता का व्यवहार नहीं करता जा रहा है? यह सोचना आज अत्यंत आवश्यक हो गया है क्योंकि पेड़ आज मनुष्य के हाथों अत्यंत पीड़ित होकर मनुष्य से विमुख होता जा रहा है। पेड़ रहित पृथ्वी जलने लगेगी तो प्राणी सांस कहां से ले सकेगा?

प्रारम्भ में प्रकृति ने मनुष्य को भरपूर वन सम्पदा सौंपी थी ताकि वह अपने लौकिक जीवन को सुखद और समृद्ध बना सके। सहस्रों वर्षों तक मनुष्य सदुपयोग करता रहा और नैतिक कर्तव्य के तौर पर पेड़-पौधों का संरक्षण-संवर्धन भी करता रहा किन्तु आज यह स्थिति बहुत बदल चुकी है। प्रारम्भ में धरती के दो तिहाई भाग यानि 12 अरब 80 करोड़ हेक्टेयर में वन थे जो अब तक निरंतर घटते आ रहे हैं आधुनिक अनियंत्रित प्रगति की होड़ और मनुष्य की अनैतिक धनार्जन की दौड़ में हर पल मरता जा रहा है बेचारा पेड़। यद्यपि इस हानि की मार सारे विश्व को सहनी पड़ रही है तो भी यदि हम अपने ही देश की बात भी करें तो स्थिति भयावह लगती है। वन सम्बन्धी एक नवीनतम सर्वेक्षण के आधार पर मात्र 23 प्रतिशत भू-क्षेत्र ही वनाच्छादित रह गया है जबकि स्वस्थ पर्यावरण के लिए न्यूनतम सीमा 33 प्रतिशत चाहिए। उपलब्ध 23 प्रतिशत में से भी भूमि का बड़ा भाग शिलाखण्डों, चट्टानों, हिमानियों और रेतीले टिलों से घिरा हुआ है जिसे घटाकर केवल 16 प्रतिशत ही वनाच्छादित बचता है और उसमें भी अच्छे वन तो मात्र 10 प्रतिशत क्षेत्र में ही रह गये हैं। परिणामतः ऋतुचक्र डगमगा गया है। वायुमण्डल और पर्यावरण बुरी तरह से प्रदूषित होता जा रहा है। विश्व के बड़े देश विकासशील एवं अविकसित देशों के सिर पर ठिकरा फोड़ रहे हैं जबकि इस दुर्दशा के लिए अधिकतर बड़े और विकसित देश ही जिम्मेदार हैं। हां, देखादेखी में हम सब भी साथ दे रहे हैं।

भारत प्रकृति प्रधान देश है। किसानों-बागबानों का देश है। यहां पर प्रकृति हनन से होने वाली हानि हर व्यक्ति को पीड़ादायक लगती है। इस पीड़ा की अनुभूति मनुष्यों के साथ- साथ पेड़ भी करते हैं जिसका वर्णन घनश्याम सैलानी द्वारा अपनी 'पेड़ की पुकार' रचना में यों किया गया है:-

तुम्हारे लिये जीवित रहना चाहता हूं, इसलिए मैं युगों से इस धरती पर खड़ा हूं।

मैं तुम्हारे लिये फलता-फूलता हूं और फूलों-फलों में मिठास भरकर तुम्हारे सामने झुकता रहता हूं।

मैं हवा, पानी और छाया लेकर तुम्हारी फसलों को पालता पोसता हूं।

मैं अन्नू हूं, मैं दूध हूं। मुझे मत काटो। मुझे पीड़ा लगती है।

इसलिए तो मेरा नाम पेड़ है। मेरी रक्षा करो, मुझे लगाओ और धरती को सजाओ।

खेत की मेढ़ पर, पहाड़ की ढाल पर, मैं खड़ा हूं, मैं मिट्टी को बनाता हूं, उसे बचाता हूं।

मुझे मत काटो, याद रखो नीचे गांव है।'

यह ठीक है कि कवि लिखता है अनुभूति, पीड़ा तथा दूरदर्शिता से। किन्तु व्यवहारिकता में हमें पेड़ को काटना भी पड़ता है। अतः प्राकृतिक सम्पदाओं का सदुपयोग करना अनिवार्य है, परन्तु उसका अति दोहन और दुरुपयोग निश्चित ही दुर्दशाजन्य होता है। दुनिया में इस प्रकार की दुदर्शा की पीड़ा का अनुभव करना शुरू कर दिया है। प्रकृति प्रकोप के अनेक रूपों में।

आज की बिगड़ती जा रही वन्य एवं पर्यावरण परिस्थितियों में विश्व बुरी तरह से फंसता जा रहा है। प्रदूषण की पराकाष्ठा हो रही है, महामारियों का जाल फैलता जा रहा है। ऊर्जा का अति दोहन जीवन को दुष्प्रभावित कर रहा है। हर सूझ-बूझ वाला व्यक्ति तथा मानवीयता का शुभचिंतक आज प्रकृति और पर्यावरण की बिगड़ती जा रही अवस्था से बहुत चिंतित है और पुरजोर लोगों को आगाह कर रहा है कि पेड़ को बचाओ, ये पेड़ की हमारे जीवन मरण के सच्चे साथी हैं। पेड़ बिना प्राण संभव नहीं।

हाल ही में साठवां वन महोत्सव मनाते हुए मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने भी लोगों का आह्वान करते हुए कहा है कि देवदार लगाओ और शिमला बनाओ। यह सामयिक और सकारात्मक सलाह है जिसका स्वागत जनता को पेड़ लगाकर ही नहीं उनकी देखरेख द्वारा भी करना चाहिए। नगरों में शायद कम संभव हो, मगर गांव में सरकार द्वारा चलाई जा रही पेड़ लगाने की परियोजनाओं का भरपूर लाभ उठाया जाना चाहिए। जब सरकार और समाज सहयोग से अग्रसर हों तो सफलता सुलभ हो जाती है। सरकार से सहायता वांछनीय होती है पर सजगता समाज में होनी अनिवार्य होती है। पेड़ लगाने से ज्यादा उनका पोषण और संरक्षण सराहनीय एवं लाभकारी होता है। ऐसा करके हम पेड़ के प्रति अपनी कृतज्ञता ही प्रदर्शित करते हैं। हम अधिक पेड़ों से अधिक लाभान्वित तो हो सकते हैं, किन्तु ऋण मुक्त कदाचित नहीं।

हमारी शिक्षा व स्वास्थ्य सबसे बेहतर

हिमाचल प्रदेश की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में प्रदेश को हाईटेक स्वास्थ्य सुविधाओं से जोड़ने का सपना अब सच होने लगा है। स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए मिलने वाले पुरस्कार हिमाचल में स्वास्थ्य विकास की पुष्टि कर रहे हैं। हिमाचल के दूरस्थ अस्पतालों में स्वास्थ्य सुविधा मजबूत करने के साथ-साथ प्रदेश के लिए नई से नई योजनाएं चलाने के कार्यक्रमों ने हिमाचल में गति पकड़ ली है। हालांकि अभी भी सरकार के सामने स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने के लिए कई परेशानियां खड़ी हैं, लेकिन हिमाचल में जितना भी डेढ़ वर्ष में विकास हुआ है, उससे साबित होता है कि हिमाचल के कोने-कोने में स्वास्थ्य सुविधा मजबूत हो रही है। जानकारी के मुताबिक प्रदेश में 700 से अधिक खाली पद भरे गये हैं, जिनमें आयुर्वेदिक चिकित्सक, एलोपैथी चिकित्सक, नर्सिज स्टाफ, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी शामिल हैं। 250 नर्सिज स्टाफ को भरा गया है, 300 डॉक्टरों को खाली पदों के अनुरूप नियुक्त किया जा चुका है।

हिमाचल को एजुकेशन में भी देश पर भर में सर्वश्रेष्ठ आंका गया है। इस उपलब्धि के लिए प्रदेश को बेस्ट स्टेट अवार्ड से नवाजा गया है। यह पुरस्कार प्रदेश को एजुकेशन हब बनाने में प्रोत्साहन देगा। भाजपा सरकार ने सत्ता संभालते ही 2300 शिक्षकों की बैचवाइज भर्ती को हरी झंडी दी। इनमें से 1713 टीजीटी मेडिकल, टीजीटी नॉन मेडिकल और टीजीटी ऑटर्स को नियुक्तियां दे दी गई हैं। 634 कॉलेज लेक्चरर की भर्ती प्रक्रिया चली हुई है। 60 फीसदी चयनित कॉलेज लेक्चरर को नियुक्तियां दे दी गई हैं। स्कूल लेक्चरर के लगभग 1000 पदों की भर्ती प्रक्रिया शीघ्र ही शुरू होने की संभावना जताई जा रही है।

हिमाचल को बेहतर शिक्षा मुहैया करवाने के लिए फिर से अव्वल आंका गया है। हिमाचल जहां साक्षरता दर के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, वहीं बच्चों का रुझान उच्च शिक्षा की ओर भी बढ़ रहा है। प्रदेश में 20 फीसदी से अधिक बच्चे 12वीं कक्षा की पढ़ाई के बाद उच्च शिक्षा लेने को उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश ले रहे हैं, जबकि अन्य राज्य में औसतन 12 फीसदी बच्चे उच्च शिक्षा ले रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान के तहत 6-14 साल के प्रत्येक बच्चे को स्कूल ले जाने के लक्ष्य को हिमाचल लगभग पूरा कर चुका है। प्रदेश में 6-14 साल के लगभग शत-प्रतिशत बच्चे स्कूलों में हाजिरी लगा चुके हैं।

(दिव्य हिमाचल से साभार)

जन संसद जन संसद जन संसद

कब मिलेगी ट्रैफिक से निजात

मैं गिरिराज के माध्यम से कांगड़ा जिला प्रशासन का ध्यान धर्मशाला (कांगड़ा), हि.प्र. के समीप दाड़ी गांव में ट्रैफिक कंट्रोल के लिए बाईपास के निर्माण की ओर दिलाना चाहता हूं। धर्मशाला से पालमपुर की ओर जाने वाले वाहनों को दाड़ी गांव के बाजार से गुजरने की अनुमति नहीं है। ये सभी वाहन बाईपास से जाते हैं। छोटे वाहनों एवं दोपहिया वाहनों को भी बाजार से जाने की अनुमति नहीं है परन्तु ये वाहन बाईपास में थोड़ी दूर जाकर एक पैदल रास्ते से बाजार में प्रवेश कर जाते हैं। इससे प्रशासन द्वारा ट्रैफिक कंट्रोल का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। पैदल रास्ता काफी तंग है। जब छोटे वाहन एवं दो पहिया वाहन इस पैदल रास्ते पर जाते हैं तो पैदल चलने वालों विशेषकर बूढ़े लोगों के लिए दुर्घटना का खतरा बना रहता है।

अतः जिला प्रशासन से अनुरोध है कि इस समस्या के समाधान हेतु ठोस कार्रवाई की जाये। नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के चालकों से भारी जुर्माना वसूला जाये।

कांगड़ा **एस.के. धीमान**

सार्वजनिक वितरण प्रणाली सुदृढ़ की जाये

मैं गिरिराज के माध्यम से प्रदेश सरकार का ध्यान मंत्रिमण्डलीय फैसले जिसमें प्रदेशवासियों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत रिफाइंड तेल की आपूर्ति जारी रखने का निर्णय लिया गया था, की ओर दिलाना चाहता हूं। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री जी ने अपने एक वक्तव्य में अगस्त 2009 में लोगों को रिफाइंड तेल देने की बात कही थी लेकिन अभी तक इस दिशा में कुछ नहीं हो पाया है। लोगों को अगस्त 2009 में डिपुओं से रिफाइंड तेल नहीं मिला।

अतः हिमाचल प्रदेश सरकार से अनुरोध है कि वह मामले की जांच करें तथा लोगों को डिपुओं के माध्यम से रिफाइंड तेल की आपूर्ति सुनिश्चित करें।

दाड़ी (कांगड़ा)

सुरेन्द्र कुमार धीमान

कृषक मित्र

टिकाऊ खेती सदी की नई कृषि क्रांति

कृषि उत्पादन में अच्छी प्रगति का पूरा श्रेय हरित क्रांति को जाता है। इसके साथ कृषि के अन्य क्षेत्रों में जैसे पीली क्रांति (तिलहन), श्वेत क्रांति (दुग्ध) तथा नीली क्रांति (मत्स्य) में भी प्रगति आई। इस प्रकार भारतीय कृषि ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नया आयाम पाया है। विगत समय में कृषि की इस प्रगति में फसलों की उन्नतिशील प्रजातियां, उर्वरकों का असंतुलित उपयोग, सुनिश्चित पौध संरक्षण एवं नवीनतम कृषि यंत्रों का समावेश खेती में हो रहा है। वर्ष 1951-52 में हमारे देश का खाद्यान्न उत्पादन जो मात्र 52 मिलियन टन था, 2005-06 में लगभग 209.30 टन हो गया है। खाद्यान्न उत्पादन में हुई इस सराहनीय वृद्धि के बावजूद 2020 तक हमें 280 मिलियन टन खाद्यान्नों की आवश्यकता होगी। बढ़ती हुई इस जनसंख्या को अनाज की पूर्ति के दबाव एवं घटते हुए साधनों, मुख्यत: भूमि के संदर्भ में अधिक खाद्यान्नों का उत्पादन, वैज्ञानिकों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

डॉ. एन. दत्त
वाई.पी. दूबे

आज भी हमारे देश में धान एवं गेहूं की पैदावार विश्व के विकसित देशों की तुलना में काफी कम है। तिलहनी एवं दलहनी फसलों की पैदावार प्रतिवर्ष घटती जा रही है। इसका मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधनों का प्रतिकूल दोहन व अनुचित उपयोग माना जा रहा है।

सम्पूर्ण जीवों की माता कहने वाली पृथ्वी जो हमारा भरण पोषण कर रही है, उनके बिगड़ते स्वास्थ्य का ध्यान दिये बिना हम अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए समस्त प्राकृतिक संसाधनों, मुख्यत: भूमि का उपयोग करने में जरा भी संकोच नहीं करते हैं। हरित क्रांति का अधिकतम लाभ लेने के लिए रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित प्रयोग के साथ-साथ खरपतवारनाशक एवं पौध संरक्षण के लिए ऐसे रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग किया जा रहा है जिसके कारण भूमि के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों का आपस में संतुलन बिगड़ने लगा है जिसका अहम कारण मिट्टी में कार्बनिक अंश का घटना हो रहा है। कार्बनिक पदार्थ के मिट्टी में घटने के और भी कई कारण है। किसान जो भी फसल काटता है उसका डंठल या तो पशुओं को चारे के रूप में खिला देता है या फिर ईंधन के रूप में अपने उपयोग में करता है। कई उत्तरी राज्यों जैसे कि पंजाब और हरियाणा में जमीन को अगली फसल की जुताई करने के लिए धान की फसल का तना जलाने की कुरीति है जिससे वायु प्रदूषित होती है इसीलिये इसे रोकना अति आवश्यक है।

वैज्ञानिक अनुसंधानों के आधार पर यह पाया गया है कि मिट्टी को स्वस्थ बनाये रखने के लिए इसमें पाये जाने वाले कार्बनिक पदार्थ की मात्रा उसके निश्चित मान तक स्थित रखना रहना चाहिये। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के व्याख्यानों में इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि अनाज व फलों पर मनुष्य का अधिकार है परन्तु पौधे के अन्य अवशेषों पर मिट्टी का अधिकार है। इसलिये उसे किसी न किसी रूप में सुचारू तरीके से जमीन में मिलाया जाना चाहिये। भूमि में कार्बनिक पदार्थ का घटना सचमुच चिंता का विषय है और इसे निम्नलिखित क्रियाओं द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

ऐसी फसलों के अवशेष जो पशुओं के लिये बहुत उपयुक्त चारा नहीं है। उदाहरणार्थ धान की पराली, सरसों के डंठल या पशुओं को दिये गये चारे का जूठन इत्यादि, पदार्थों को 1:1 (ताजा गोबर: ऊपर बताये गये पदार्थों में से कोई भी) के अनुपात के कम्पोस्ट बनाकर मिट्टी में डाला जा सकता है। खरपतवारों की पंक्तियां का पूरा हिस्सा (फूल बनने की अवस्था से पहले) कम्पोस्ट बनाकर मिट्टी में डाला जाना चाहिये। इन व्यर्थ पदार्थों को केंचुआ खाद बनाकर भी फसल उत्पादन के काम में लाया जा सकता है।

हरित क्रांति में कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि में पाये जाने वाले मित्र जीवों तथा लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या या तो कम होती जा रही है या तो वे अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर पा रहे हैं। किसानों को कीटों के नियंत्रण व खरपतवारों के रोकथाम के लिये ऐसे कीटनाशकों एवं खरपतवारनाशकों का प्रयोग करना चाहिये जो पौधों के अरक (जिनको बायोपेस्टीसाइड कहा जाता है) से तैयार किये गये हैं। जैसे नीम का तेल इसका एक अच्छा उदाहरण है।

अत: भूमि के गुणों एवं पर्यावरण में सामंजस्य बनाये रखना ही टिकाऊ खेती का उद्देश्य है। इसके प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:-

1. कृषि उत्पादन में वांछित बढ़ोतरी एवं अधिक लाभ।
2. प्राकृतिक संसाधनों (मृदा, जल, वायु एवं वन) का बेहतर एवं समन्वित संरक्षण।
3. कृषि रसायनों का कम से कम उपयोग तथा फसलोत्पादन में जैविक संसाधनों जैसे जैविक खादें एवं नियंत्रण को बढ़ावा देना।
4. फसलोत्पादन के लिए एकीकृत पौध पोषण पद्धति को अपनाना।
5. जल (मृदा, जल एवं वर्षा जल) का अधिकतक संरक्षण।
6. भूमि कटाव को रोकने के लिए समुचित भूमि प्रबन्धन।
7. कृषि उत्पादन से पर्यावरण को बचाना तथा कृषि उत्पादन की नीतियां निर्धारित करते समय पर्यावरण का विशेष ध्यान रखना।

अत: इस बदलते परिवेश में यदि कृषि के क्षेत्र में क्रांति लानी है तो हमें एक ऐसी कृषि उत्पादन की दिशा का निर्धारण करना होगा जिसमें कृषि उत्पादन के साथ-साथ उसकी गुणवत्ता, मृदा स्वास्थ्य तथा पर्यावरण संरक्षण का समावेश एक साथ हो।

कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों की आवश्यकता

भारतीय किसानों के लिए कृषि एक ऐसा विकल्प है जहां पर किसान अपने खेतों में सोना पैदा करने की कहावत को सिद्ध कर सकता है। सिर्फ जरूरत है कि वह कृषि की महंगी विधियों को न अपनाकर आधुनिक, सरल व कम खर्चीली काश्त की विधियों को उपयोग में लायें। इसके लिए कृषकों को चाहिए कि वे समय-समय पर कृषि वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों, कृषि विकास प्रसार अधिकारियों से सम्पर्क बनाए रखें व उनसे कृषि सम्बन्धि जानकारियों व सूचनाओं को एकत्रित कर कृषि कार्य में समावेश करें।

प्राय: यह देखा जा रहा है कि दिन प्रतिदिन भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती जा रही है। समय बदलता जा रहा है, मानसून धोखा देने लगा है, कभी अति सूखा तो कहीं बाढ़। पर्यावरण के असंतुलन का यह परिणाम है। जल और भूमि के प्रबन्धन का समय आ गया है, क्योंकि प्रकृति में मौजूद जल चक्र पर्यावरण के प्रभाव से खण्डित हो गया है, जिसे पहले जैसा बनाना होगा। मिट्टी और पत्थरों से तालाब नदियां भरती जा रही हैं। मिट्टी में जल शोषण क्षमता कम होती जा रही है तथा भू- जल का स्तर नीचे गिरता जा रहा है। सूखे की स्थिति इतनी बढ़ चुकी है कि खादों की मात्रा अधिक प्रयोग करने के बाद भी खेती उत्पादन घटता जा रहा है। किसानों को अपनी फसलों का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है, जितनी कि लागत पर वह फसल उगाते हैं साथ ही उपलब्ध कीमत पर उन्हें उचित लाभ प्राप्त नहीं होता है।

● डॉ. शकुन्तला राही

किसानों को ऐसी विषम परिस्थितियों पर ऐसी फसलों का चयन करना चाहिए, जिनमें कि पानी की खपत कम हो जैसे कि धान गेहूं की खेती को सीमित करना तथा दलहन व तिलहन फसलों की खेती को बढ़ावा देना। साथ ही बाग-बागीचों और फलदार पेड़ों/उद्यानों को विकसित करना व इनके बीच में सब्जी उत्पादन दलहन उत्पादन करना एक सुचारू रूप की खेती पद्धति सिद्ध हो सकती है। आगामी समय में विश्व व्यापार स्पर्धा को देखते हुए किसानों को अपनी कृषि उत्पादों तथा कृषि क्षेत्रों में अभी बहुत कुछ परिवर्तन करने होंगे, जिसके लिए आर्गेनिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देना होगा। खेती के प्रति प्राकृतिक संसाधनों को जुटाना होगा, जिससे कि रासायनिक खादों तथा कीटनाशकों के कारण उत्पन्न कीट पुनरोत्पादन कीटनाशी विषाक्ता अवशेष, पेस्ट-पेस्साइट व प्रीडेटर के असंतुलन से बचते हुए अपने उत्पादों को बाजार मण्डी में उच्च/उत्तम गुणवत्ता के साथ बेचना होगा।

यदि किसानों द्वारा जैविक खेती व जैविक कीट नियंत्रण/समेकित कीट प्रबन्धन के पहलुओं पर अधिक ध्यान दिया जाये तो खेती को लगभग 60 प्रतिशत तक कम खर्चीला बनाया जा सकता है। जैसे कि फसलों के नाशी कीटों को उनके प्राकृतिक शत्रु कीटों (परभक्षी एवं परजीवी) द्वारा नियंत्रण करवाया जाना एक सफल प्रयास सिद्ध हो सकता है, साथ ही पर्यावरण को कीटनाशकों के खतरों से सुरक्षित रखने के लिए नाशी कीटों के विरुद्ध परभक्षी, परजीवी, विषाणु, जीवाणु एवं जैविक रोग नाशी फफूंद और फेरोमैन ट्रैप व लाइट ट्रैप का प्रयोग एक सफल प्रयास है। इस दिशा में अनेकों प्रयास किये जा रहे हैं तथा दुश्मन कीटों के परभक्षी, परजीवी कीटों, विषाणु जीवाणु व रोग नाशी फफूंद एवं फेरोमैन ट्रेप व लाइट ट्रेप इत्यादि को बड़े पैमाने पर हमारे देश के कृषि संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों की प्रयोगशालाओं में तैयार कर फसलों के नाशी कीटों के विरुद्ध उनके नियंत्रण हेतु किसानों को उपलब्ध करवाया जा रहा है।

अत: कृषि वैज्ञानिकों/प्रसार कार्यकर्ताओं द्वारा किसानों के लिए किये जा रहे प्रयास निश्चित ही सार्थक सिद्ध होंगे और इस तरह से भारतीय किसान कृषि के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों को अपनाकर अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

सब्जियों में खरपतवारों का नियंत्रण

खरपतवार मनुष्य के ही नहीं, फसलों और सब्जियों के भी शत्रु हैं। खरपतवार वैसे तो सब फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। पर सब्जियों में खरपतवारों की समस्या फसलों की अपेक्षा बहुत ही गंभीर होती है। क्योंकि सब्जियों में पौधों के बीच की दूरी अधिक होती है। अत: खरपतवारों को फलने-फूलने के लिए काफी जगह मिल जाती है। दूसरा सब्जियों में हमें थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद पानी व खाद देने पड़ते हैं जिसका लाभ खरपतवार को होता है और सब्जियों की पैदावार व गुणवत्ता पर विपरीत असर डालते हैं। खरपतवारों की अधिक बढ़ोतरी के कारण फलों व सब्जियों का आकार व रंग बदल जाता है।

अत: यह जरूरी हो जाता है कि अगर सब्जियों से अच्छी क्वालिटी व उपज लेनी है तो इन्हें पूरा खत्म करना चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लिए मेकेनिकल, कल्चरल और रासायनिक तरीकों को अपनाया जा सकता है। खरपतवार रहित बीज का प्रयोग करना चाहिए। ध्यान रहे कि गोबर की खाद अच्छी तरह गली सड़ी हो। खेतों के आसपास की जगह भी खरपतवार रहित हो। खरपतवार नियंत्रण के लिए फसल चक्र अपनाना चाहिये। सब्जियों में मलचिंग से भी खरपतवारों की समस्या से निजात पाया जा सकता है। रासायनिक विधि से हम कैसे सब्जियों में खरपतवार नियंत्रण कर सकते हैं जिसे सारणी में दिखाया गया है।

सावधानियां:-

1. खरपतवारनाशी सदैव विश्वसनीय स्रोतों से ही खरीदें।
2. खरपतवारनाशी का प्रयोग सदा बताये गये समय व मात्रा के अनुसार ही करें।
3. खरपतवारनाशी का प्रयोग तभी करें जब खेत में पर्याप्त नमी हो।
4. स्प्रे करने से पहले पम्प को पानी से जरूर साफ कर लें
5. गर्मी के मौसम में सुबह या शाम के समय ही छिड़काव करें।
6. स्प्रे करते समय पूरे कपड़े पहने व मुंह को ढककर रखें।
7. खाली पेट कभी भी स्प्रे न करें।
8. स्प्रे करते समय न ही कुछ खायें न ही पीयें।
9. खरपतवारनाशी को बच्चों की पहुंच से दूर रखें।
10. स्प्रे करने के बाद पम्प को जरूर साफ कर लें।

–डॉ. दीप कुमार
–डॉ. विशाल डोगर

सारणी

क्र. सं.	फसल का नाम	खरपतवारनाशी का नाम	मात्रा/बीघा	छिड़काव का समय
1.	टमाटर	लासो (एला क्लोर)	320 मि.ली.	रोपाई से एक दो दिन पहले
		या स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	320 मि.ली.	–यथा–
		या वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	200 मि.ली.	–यथा–
2.	शिमला मिर्च, मिर्च एवं बैंगन	लासो (एलाक्लोर)	320 मि.ली.	–यथा–
		या स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	320 मि.ली.	–यथा–
3.	भिण्डी	वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	200 मि.ली.	बीजाई से एक दिन पहले
		या लासो (एलाक्लोर)	320 मि.ली.	बीजाई के एक दिन बाद
4.	फ्रांसबीन	स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	320 मि.ली.	बीजाई से एक दो दिन पहले
		या लासो (एला क्लोर)	320 मि.ली.	–यथा–
		या वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	200 मि.ली.	–यथा–
5.	मटर	स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	250 मि.ली.	बीजाई के दो दिन के अंदर
		या लासो (एला क्लोर)	250 मि.ली.	–यथा–
		या वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	200 मि.ली.	–यथा–
6.	फूलगोभी	स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	240 मि.ली.	रोपाई से एक या दो दिन पहले
		या लासो (एला क्लोर)	240 मि.ली.	–यथा–
7.	बंदगोभी	स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	240 मि.ली.	–यथा–
		या वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	160 मि.ली.	–यथा–
8.	मूली व शलजम	वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	120 मि.ली.	बीजाई से एक या दो दिन पहले
9.	प्याज	स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	240 मि.ली.	रोपाई से एक या दो दिन पहले
		या लासो (एलाक्लोर)	160 मि.ली.	–यथा–
10.	लहसुन	स्टॉम्प (पैडीमैथलिन)	240 मि.ली.	बीजाई से एक या दो दिन पहले
		या वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	120 मि.ली.	–यथा–
11.	आलू	वैसालिन (फ्लूक्लोरिलिन)	240 मि.ली.	–यथा–
		या एट्राजीन	160 ग्राम	अंकुरण से पहले
		या आइसोप्रोटुरान	160 ग्राम	–यथा–

नोट:- छिड़काव के लिये प्रति बीघा (800 वर्गमीटर) 60 लीटर पानी का प्रयोग करें।

कुल्लू दशहरा में मां हिडिम्बा

कुल्लू में देवी हिडिम्बा एक सशक्त देवी है। इस देवी के विषय में अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं। मनाली में ढूंगरी के घने जंगल में अवस्थित यह देवी पुरातन काल में एक राक्षसी होने का स्वयंमेव ही आभास करवाती है जबकि कुल्लू के राजवंश के लिए यह प्रथम आराध्य देवी है जिसने इस राजवंश को राज्य प्रदान किया।

एक प्रचलित कथा के अनुसार मायापुरी का निर्वासित राजकुमार जब जगतसुख में पहुंचा तो उसे एक बुढ़िया मिली। बुढ़िया 'भयांगणु' नामक नाले के किनारे बैठी थी और नाला पार करना चाह रही थी। नाले का पानी बहुत तेजी से बह रहा था। अत: बुढ़िया ने राजकुमार से भयंकर नाला पार करवाने का अनुरोध किया। राजकुमार ने बिना कोई संकोच या आनाकानी किए बुढ़िया को अपनी पीठ पर बिठाया और नाला पार करवा दिया। पार पहुंचने पर बुढ़िया ने पूछा कि तुम्हें कहां तक दिखाई दे रहा है। राजकुमार ने अपनी दृष्टि की सीमा तक देख पूरा क्षेत्र बताया। बुढ़िया ने उसे आशीर्वाद दिया कि जहां तक तुम्हारी दृष्टि पहुंच रही है, वह पूरा क्षेत्र तुम्हारा हुआ। फलत: राजकुमार को जयधार जगतसुख में पहुंचते ही वहां का राजा घोषित कर दिया गया।

यह कथा यद्यपि स्वप्नलोक की तरह लगती है किन्तु किंवदंति यही है कि कुल्लू के राजवंश की स्थापना मायावती से आए राजकुमार विहंगमणिपाल द्वारा हुई। आज भी यह राजवंश हिडिम्बा को अपनी 'दादी' कहता है।

हिडिम्बा एक आदि देवी है जिसे 'हिरमा' भी कहा जाता है। कई जगह 'हिरबणी' भी कहते हैं। हिडिम्बा नाम बाद में दिया प्रतीत होता है।

कुल्लू के प्रथम शासक विहंगमणिपाल का काल निर्धारण राहुल सांकृत्यायन ने 360 ईसवी किया है। यह भी विश्वास है कि विहंगमणिपाल अपनी रानी तथा पुत्र पछपाल के साथ कुल्लू आया। राहुल जी ने इस संस्थापक राजा से लेकर आगे के राजाओं का भी काल निर्धारण किया है।

इस राजवंश की वंशावली की कई सूचियां मिलती हैं जिनमें इनका काल निर्धारण अपने अपने ढंग से किया गया है। कुल्लू की पहली राजधानी 'नस्त' थी जिसे वर्तमान जगतसुख माना जाता है। यहां पर राजाओं ने बारह पीढ़ियों तक राज्य किया। इसके बाद राजधानी नग्गर लाई गई। राजा जगतसिंह (1637-1662) के समय इसे जगतसुख लाया गया और इसी राजा के समय प्रसिद्ध कुल्लू दशहरा का प्रारम्भ हुआ।

● सुदर्शन वशिष्ठ

राजाओं ने अपनी परम्परा को याद रखा और श्रीरघुनाथ को राज्य सौंपते हुए, उन्हें सर्वोत्तम देव मानते हुए भी अपनी मूल और कुल देवी को नहीं भुलाया। आज भी दशहरे का आरम्भ तब तक नहीं होता, जब तक कि देवी हिडिम्बा का आगमन नहीं हो जाता। देवी के पधारे बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। देवी को आमंत्रण देने हेतु राजा की ओर से छड़ी भेजी जाती है जो कुल्लू के रामशिला तक जाती है जहां देवी ठहरी होती है। देवी, राजा का आमंत्रण पा कर सुल्तानपुर महलों में पहुंचती है। उसके पधारने पर ही आगामी कार्यवाही आरम्भ हो सकती हैं देवी का धड़छ राजा स्वयं उठाता है। देवी के धड़छ के बाद की राजा 'ठारा करडू' का धड़छ उठता है। अर्थात् सर्वप्रथम देवी की पूजी की जाती है और उसके बाद ही अन्य देवताओं की।

हिडिम्बा मंदिर मनाली

हिडिम्बा का मंदिर मनाली बाजार से लगभग तीन किलोमीटर ऊपर देवदार के जंगल में है। अब मंदिर तक छोटे वाहन योग्य सड़क बन गई है किन्तु पुराने समय में यह स्थान जंगल होने से डरावना रहा होगा। हिडिम्बा को ढूंगरी देवी कहा जाता है। अत: इस स्थल का नाम ढूंगरी हैं

मंदिर के भीतर एक चट्टान है जिसके नीचे देवी का स्थान माना जाता है। चट्टान अर्थात् 'ढूंग' के कारण ही इसे ढूंगरी देवी कहा जाता है। इस चट्टान के बाहर पैगोडा शैली का कलात्मक मंदिर निर्मित है। मंदिर में शिला पर महिषासुरमर्दिनी अंकित है जबकि स्थानीय परम्परा के अनुसार लाक्षागृह से पाण्डवों के वन गमन के समय भीम का विवाह हिडिम्बा से हुआ। इस पौराणिक आख्यान के साथ-साथ हिडिम्बा को राजपरिवार अपनी 'दादी' मानता है। लोककथा के अनुसार हिडिम्बा ने ही कुल्लू के प्रथम शासक विहंगमणिपाल को यहां का शासन बख्शा है। अब भी कुल्लू दशहरा का आरम्भ हिडिम्बा के रथ के आगमन के बिना नहीं हो सकता। यहां मई मास में ढूंगरी जातर लगती है। इस जातर में पहले भैंसा काटा जाता था। जे. कैलवर्ट ने अपनी पुस्तक 'द सिलवर कंट्री' में भैंसा काटे जाने का एक चित्र दिया है। अत: देवी का महिषासुरमर्दिनी रूप भी जनमानस में रहा है।

हिडिम्बा एक ऐसी देवी है जिस का मंदिर भी है जिसमें विधिवत् पूजा होती है और रथ भी है जो उत्सवों के समय सजता है। प्राय: उन देवताओं के नित्यप्रति पूजा वाले मंदिर नहीं है जिनके रथ बने हैं।

देवी के मोहरे (मास्क) में इसके राजा उद्धरणपाल के समय सन् 1418 में बने होने का उल्लेख है जब कि मंदिर के द्वार पर टांकरी के लेख के अनुसार मंदिर का निर्माण राजा बहादुर सिंह (1546-1569) ने सन् 1553 में करवाया। अत: स्पष्ट है वर्तमान मंदिर से पहले भी देवी का अस्तित्व रहा है और देवी किसी न किसी रूप में, चाहे लोकदेवी के रूप में ही सही, पूजी जाती रही है।

वर्तमान मंदिर पैगोडा शैली और उत्कृष्ट काष्ठकला का एक आकर्षक उदाहरण है। मंदिर के प्रवेश द्वार तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां हैं। सीढ़ियों के ऊपर समतल जगह में मंदिर निर्मित है। पैगोडा की तीनों ढलवां छतों पर लकड़ी लगाई गई है। सबसे ऊपर का हिस्सा शंकु की तरह है। पैगोडा नीचे से ऊपर पतला होता गया है। गर्भगृह के बाहर प्रदक्षिणा पथ बरामदे में है। मंदिर का निर्माण पहाड़ी शैली में परम्परागत ढंग से हुआ है। देवदारों के शहतीरों के भीतर पत्थर लगाये गये हैं। दीवारों में मिट्टी का पलस्तर और गोबर की पुताई हुई है। निचली मंजिल में गर्भगृह के बाहर बरामदा है।

दक्षिणेश्वर महादेव निरमण्ड की भांति इस मंदिर के द्वार पर भी उत्कृष्ट नक्काशी हुई है। इस पर सिंहमुख का हैंडल लगा है। द्वार के ऊपर बारहसिंगा, मेढ़े आदि के सींग लगाये गये हैं जिन की यहां बलि दी गई होगी। दरवाजे की द्वारसाखों पर ऊपर तथा नीचे दोनों ओर सुंदर नक्काशी है। द्वार के निचले भाग में एक ओर महिषासुरमर्दिनी और दूसरी ओर दुर्गा अंकित है। सामने दोनों ओर साधक खड़े हैं। गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण के चित्र भी काष्ठ में उकेरे गये हैं। इन पट्टिकाओं को फूल-पत्तों से आकर्षक बनाया गया है। प्रवेश द्वार के मध्य में गणेश प्रतिमा के साथ नवग्रह, (शेष पृष्ठ 7 पर)

गम्भेश्वर महादेव मंदिर

शिव निवास करते हैं जहां

पहले यह गुफा शिव मंदिर या शिव गुफा के नाम से जानी जाती थी। लेकिन कुछ वर्ष पूर्व इसका नामकरण श्री गम्भेश्वर महादेव कर दिया गया। गम्बर यहां बहने वाली नदी का नाम है जो ऋषि गम्भीरा के नाम पर पड़ा है। ऋषि गम्भीरा ने यहां तपस्या की थी।

● सीमा परिहार

हिमाचल प्रदेश भारत में देवभूमि के नाम से जाना जाता है। साहित्य और परम्पराओं में हिमाचल भगवान शिव की धरती है। शिव के साथ ही यहां शक्ति और विष्णु भगवान की भी पूजा- अर्चना की जाती है। यहां लगभग छ: हजार के आसपास मंदिर हैं। ये सभी शिव-शक्ति, विष्णु और ब्रह्मा को समर्पित हैं। इनमें से कुछ तो सदियों से लोगों की श्रद्धा और आस्था का केन्द्र बने हुए हैं।

कुछ मंदिर ऐतिहासिक महत्त्व है और इनका वर्णन ऐतिहासिक पुस्तकों, अभिलेखों और प्राचीन पांडुलिपियों में भी मिलता है। ये मंदिर अपने प्राचीन वैभव और संरचनात्मक स्वरूप के कारण धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों, कलाकारों, पर्यटकों के आकर्षण का भी केन्द्र हैं। लेकिन कुछ ऐसे स्थान भी हैं जो बहुत प्राचीन होते हुए भी अभी तक गुमनामी के अंधेरे में छुपे हुए हैं।

सोलन जिले के वाकनाघाट-ममलीग सड़क पर वाकनाघाट से लगभग 10 किलोमीटर और ममलीग से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर, गम्बर नदी के किनारे इसी प्रकार का एक प्राचीन गुफा मंदिर स्थित है।

पहले यह गुफा शिव मंदिर या शिव गुफा के नाम से जानी जाती थी। लेकिन कुछ वर्ष पहले इसका नामकरण श्री गम्भेश्वर महादेव कर दिया गया। गम्बर यहां बहने वाली नदी का नाम है जो ऋषि गम्भीरा के नाम पर पड़ा है। ऋषि गम्भीरा ने यहां तपस्या की थी।

प्रचलित है कि किसी समय क्षेत्र में बारह वर्षों तक बारिश नहीं हुई और चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। उस समय शिमला के समीप तारा देवी के क्षेत्र में एक महात्मा रहते थे। चारों ओर उनके चमत्कारों की ख्याति थी। जब कुछ नहीं बन पड़ा तो लोग अकाल को समाप्त करने के लिए उपाय जानने उनके पास चले गए। महात्मा ने बताया कि उक्त क्षेत्र में बहने वाली नदी में भगवान शिव की एक पिंडी है। सभी मिलकर उस पर जल का सवा लाख लोटा जल चढ़ाओ। लोगों ने वैसा ही किया।

कहते हैं कि सांझ होते-होते बारिश शुरू हो गई और इतनी बारिश हुई कि नदी का जल स्तर ऊंचा उठकर शिवलिंग को छूने लगा। इस क्षेत्र में आज भी ये परम्परा है कि जब भी काफी समय तक बारिश नहीं होती और लोगों को अगली फसल की बीजाई करनी होती है तो इलाके के सभी लोग मिलकर पिंडी पर सवा लाख लोटा जल का चढ़ाते हैं। ऐसा देखा गया है कि लोगों की आस्था कभी भी खाली नहीं जाती। जल चढ़ाने पर बारिश जरूर हो जाती है।

यह गुफा एक छोटी गुफा है और इसके दरवाजे पर ही भगवान शिव पिंडी रूप में विराजमान है। इस पिंडी पर जल की बूंद रिस-रिस कर गिर रही है। कहा जाता है कि इस तरह से बूंद के गिरने का ये सिलसिला सदियों से यूं ही बरकरार है। कितनी ही बरसात पड़ जाए या फिर महीनों तक बारिश न हो, जल की बूंद के गिरने का क्रम कभी भी घटता-बढ़ता नहीं है। ऐसी भी मान्यता है कि ये बूंद कभी दूध की धारा थी। किसी ने इसकी परीक्षा करने के लिए इसका स्वाद चखाने की कोशिश की तो ये धारा पानी में बदल गई।

मुख्य मूर्ति के साथ ही एक छोटी संरचना उसी रूप और आकार की है। इस पर भी पानी की बूंद लगातार गिर रही है। पास में ही शिव परिवार की मूर्तियां नंदी और गणेश की हैं जो लगभग सौ साल से भी ज्यादा पुरानी हैं। ये गुफा कितनी पुरानी है इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। लेकिन स्थानीय लोगों के अनुसार ये गुफा बहुत प्राचीन है। 90 से सौ वर्ष तक के बुजुर्गों ने भी इस गुफा के बारे में अपने दादा-परदादा से सिर्फ सुना मात्र है। उनका ये भी मानना है कि इनके दादा-परदादा ने भी अपने बुजुर्गों से इस गुफा की कहानियां मात्र सुनी थीं। इस परम्परा से तो ये गुफा सदियों पुरानी ठहरती है।

प्राचीन गुफा एक छोटी गुफा है और ये अपने प्राकृतिक रूप में ही विद्यमान है। इसमें मूर्तियां बहुत अंदर न होकर बाहरी दरवाजे पर ही स्थापित हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व यहां मंदिर का निर्माण किया गया है लेकिन गुफा के प्राकृतिक स्वरूप को छेड़ा नहीं गया। गुफा के अंदर गर्भगृह में जहां शिवलिंग विराजमान है उसी के ठीक सीध में इस मंदिर का शिखर है। मंदिर को नागर- शिखर शैली में बनाया गया है। गुफा के छोटे आकार, दरवाजे पर ही शिवलिंग और अन्य मूर्तियां स्थापित करने के कारण इसका कोई भी परिक्रमा पथ नहीं है। बाहर की तरफ बरामदे का निर्माण किया गया है। बरामदे में ही खड़े होकर या बैठ कर लोग पूजा-अर्चना करते हैं। गुफा नदी के साथ ही है इसलिए नदी से गुफा के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं। मुख्य सड़क से ये मंदिर लगभग 200 मीटर दूर है।

प्रतिवर्ष शिवरात्रि वाले दिन यहां बहुत बड़ा मेला लगता है। दो या तीन वर्ष के बाद यहां शिव महापुराण की कथा का भी आयोजन होता है। उस समय लोगों की सुविधा के लिए हिमाचल पथ परिवहन की बसें यात्रियों को लाने ले जाने के लिए विशेष रूप से तैनात रहती हैं। सोलन जिले में स्थित यह स्थल स्थानीय लोगों के लिए आस्था का केन्द्र है जहां श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। यह हम सब का दायित्व है कि इस समृद्ध धार्मिक मंदिर के संरक्षण को सुनिश्चित बनाएं ताकि इसे इसके मूल रूप में संरक्षित किया जा सके।

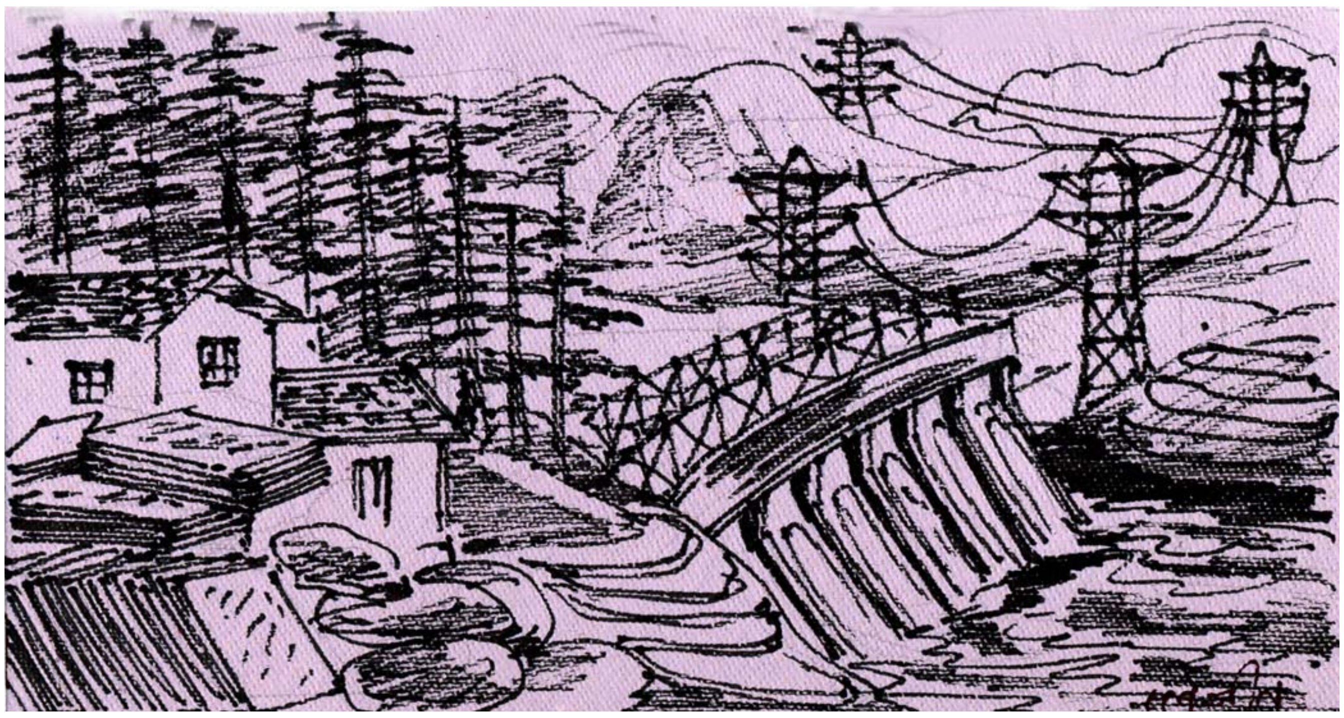

हिमाचल की प्राकृतिक सम्पदा

● एल.आर. शर्मा

हिमाचल प्रदेश प्रकृति की गोद में बसा हुआ एक पहाड़ी राज्य है। अत: इसमें प्राकृतिक सम्पदाओं का भण्डार होना स्वाभाविक है। इसमें बड़े-बड़े पर्वत हैं, पर्वतों पर बर्फ है, बर्फ के हिमनद अर्थात् ग्लेशियर हैं। पर्वतों पर घने जंगल हैं तो स्वाभाविक है कि बारिश भी काफी होती है। जहां ऐसे पर्वत हों, नदियां हों, घने वन हों, तो प्रदेश की वायु भी साफ और स्वास्थ्य- वर्धक होगी। प्राकृतिक सम्पदा में जल, वायु, खनिज, वन और पर्वतों की गणना होती है। आइए, देखें हिमाचल में प्राकृतिक सम्पदा का कितना भण्डार है।

जल सम्पदा

प्राकृतिक सम्पदाओं में जल का स्थान सबसे ऊपर है। हिमाचल प्रदेश में प्रकृति ने जल के विशाल भण्डार दे रखे हैं। जल को वर्षा से, नदियों से, सरोवरों से और भूमिगत जल भण्डारों से प्राप्त किया जाता है। हिमाचल में औसतन 1435 मिलीलीटर वर्षा होती है, जो कि राष्ट्रीय औसत से अधिक है। इतनी वर्षा हमारी आवश्यकता को अच्छी तरह से पूरी कर देती है। जल सम्पदा का दूसरा स्रोत नदियां हैं। हिमाचल में रावी, चिनाब, सतलुज, व्यास, और यमुना ये पांच मुख्य नदियां बर्फीली पर्वत शृंखलाओं से निकलती हैं। इनमें सारा साल काफी पानी रहता है। इसके अतिरिक्त इन नदियों की कई सहायक नदियां भी हैं, जो प्रदेश के प्रत्येक भाग में बहती रहती हैं। ऊना जिले में स्वां नामक नदी है, जिसका उद्‌गम किसी हिमाच्छादित पर्वत से तो नहीं है, पर फिर भी इसमें सारा साल पानी रहता है।

पनबिजली

नदियों के जल से बिजली उत्पादन की जाती है। यह इस प्राकृतिक सम्पदा का महत्त्वपूर्ण उपयोग है। हिमाचल एक ऐसा प्रदेश है, जिसकी नदियों से 20416 मेगावाट बिजली उत्पन्न की जा सकती है। इसके अतिरिक्त बिजली को अन्य प्रदेशों को बेचकर राजस्व कमाया जा सकता है। अभी तक हिमाचल की नदियों के जल से 6419 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जा चुका है। इसमें से भी बाहर के प्रदेशों को बिजली दी गई है।

वायु सम्पदा

वायु को प्राकृतिक सम्पदा के रूप में गिनना बहुत लोगों को अजीब लग सकता है। वायु कैसे और क्यों एक सम्पत्ति के रूप में गिनी जानी चाहिए? इससे क्या लाभ उठाया जा सकता है? इससे क्या पैदा किया जा सकता है? इन प्रश्नों के उत्तर में पहले तो यह कहा जा सकता है कि हिमाचल जैसे पहाड़ी प्रदेश की वायु स्वच्छ है, शीतल है और स्वास्थ्यवर्धक है, तभी तो देश-विदेश से लाखों पर्यटक यहां प्रति वर्ष आते हैं। जब पर्यटक आते हैं तो पर्यटन का व्यवसाय बढ़ता है। और जब पर्यटन का व्यवसाय बढ़ता है, तो इससे जुड़े होटल कर्मचारी, टैक्सी और बस चालक, ढाबे वाले, दस्तकार रोजगार प्राप्त करते हैं। व्यापार बढ़ता है। प्रदेश को राजस्व की प्राप्ति होती है तो हुई न वायु भी एक सम्पत्ति?

एक और गुण भी है हिमाचल की वायु में। वह यह कि कई स्थानों पर इसका वेग बहुत अधिक बना रहता है। वायु के इस वेग से बिजली के जनरेटर चलाए जा सकते हैं, जिनसे बिजली पैदा की जा सकती है। हालैंड जैसे यूरोपीय देशों में ऐसा किया जा रहा है। अभी इस ओर सरकार का और निजी संस्थाओं का ध्यान नहीं है क्योंकि प्रदेश में पनबिजली काफी मात्रा में उपलब्ध है। पर एक बात ध्यान देने योग्य है कि वायु गति से बिजली पैदा करने में पर्यावरण को कोई हानि नहीं होती, कोई जंगल नहीं काटने पड़ते हैं, कोई भूमि का कटान नहीं होता। अगर वायु वेग का किन्हीं चुनी हुई सही जगहों में प्रयोग किया जाए तो बिजली पैदा करने में सफलता मिल सकती है। खैर हिमाचल के झोले में यह प्राकृतिक सम्पदा मौजूद रहेगी। और आवश्यकता पड़ने पर इसका प्रयोग किया जा सकता है।

खनिज सम्पदा

हिमाचल में खनिज सम्पदा प्रचुर मात्रा में है और प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका रखती है। मुख्य खनिजों में पत्थरी नमक, स्लेट, चूने का पत्थर, जिप्सम डोलोमाइट इत्यादि हैं। इसके अतिरिक्त भवन निर्माण में प्रयोग लाए जाने वाले विशेष घासवां पत्थर, रेत और नदियों और खड्डों से मिलने वाली बजरी तथा रेत भी खनिजों में शामिल हैं। एक विशेष प्रकार की चिकनी मिट्टी, जिससे कुम्हार बर्तन बनाते हैं, भी एक खनिज है।

स्लेट पत्थरों का उपयोग मकानों की छतों या छप्परों को बनाने में होता था। जब से कंकरीट का प्रचलन हुआ है, तब से स्लेट के छत वाले मकानों का निर्माण लगभग बंद हो गया है। अब इस पत्थर की टाइलें बनाई जाती हैं जो दीवारों को ढकने और सजाने के काम में लाई जाती हैं। दिल्ली में हिमाचल भवन के निर्माण में भी इस प्रकार की टाइलों का प्रयोग हुआ है।

चूने के पत्थर के इस प्रदेश में पर्याप्त भण्डार हैं। इसीलिए हिमाचल में अनेक स्थानों पर सीमेंट के उद्योग लग रहे हैं। पर इस खनिज के अत्यधिक खनन से पर्यावरण प्रभावित होता है, अत: इसके प्रयोग में एक ऐसा संतुलन रखना चाहिए जिससे हमारे अमूल्य वनों को कोई हानि न पहुंचे।

वन और पर्वत सम्पदा

प्राकृतिक सम्पत्ति के रूप में वन सबसे पहले नजर में आते हैं। हिमाचल का कुल क्षेत्रफल 55673 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 67 प्रतिशत क्षेत्र में वन और पर्वत ही हैं। अत: हिमाचल पूरे भारत में सबसे अधिक वन क्षेत्रों वाले राज्यों में से एक राज्य है। वन तो नाना प्रकार की अपार सम्पदाओं से भरे पड़े हैं। वनों से हमें कई जीवनोपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं। जैसे इमारती लकड़ी ईंधन की लकड़ी, लकड़ी का कोयला, पशुओं के लिए चारा तथा घास, असंख्य प्रकार की जड़ी-बूटियां, फल तथा फूल प्राप्त होते हैं। कुछ अन्य उत्पाद भी वन सम्पदा की देन हैं, जो कई उद्योगों में काम आते हैं।

इनमें बिरोजा, कत्था, देवदार का तेल, कश्मल की जड़ें आदि प्रमुख हैं। वनों से कुछ फल भी प्राप्त होते हैं, जिनका लोग बड़े चाव से इंतजार करते हैं। चिलगोजा, अनारदाना, काफल ऐसे ही दुर्लभ फल हैं। कुछ विशेष सब्जियां भी हैं जो वनों में ही मिलती हैं और अपने पोषक तत्त्वों तथा खाद के लिए जानी जाती हैं। इनमें लिंगड, गुच्छी, बरसाती खुम्ब, कचनार की कलियों का विशेष स्थान है। जड़ी-बूटियां तो असंख्य हैं। करीब-करीब प्रत्येक पौधा अपने आप में एक विशेष गुण वाली जड़ी-बूटी है, केवल पहचानने की बात है। सामान्य जड़ी-बूटियों में बनफशा, कश्मल, गिलोय, अश्वगंधा, कंटकारि, घृतकुमारी, कचनार, एरंड, तिरमिर, बुरांश इत्यादि का प्रयोग दैनिक जीवन में सभी करते हैं। घृत कुमारी, जिसे अंग्रेजी में एलोवेरा कहते हैं, अब व्यावसायिक रूप से खेतों में उगाई जा रही है और किसानों को अच्छा लाभ दे रही है।

बुरांश के फूलों की स्क्वेश तो हिमाचल की एक विशेष पैदायश बन चुकी है। कुछ वनों के ऐसे वृक्ष भी हैं, जो हस्त उद्योग के काम आते हैं। इनमें बांस और शहतूत भी हैं, जो हस्त उद्योग के काम आते हैं। इनमें बांस और शहतूत ऐसे ही वृक्ष हैं जो टोकरियां और अन्य सामान बनाने के काम में लाए जाते हैं।

बगड़ एक घास होता है, जिससे पहले रस्सियां बनाई जाती थीं, पर अब प्लास्टिक के प्रचलन से इसका उपयोग कम हो गया है। कई वनों में हरड़, आंवला, तेजपत्ता, कढ़ीपत्ता इत्यादि बहुत मिलते हैं जिनका दैनिक जीवन में तथा व्यावसायिक रूप से बड़ा महत्त्व है।

वन वायुमण्डल को स्वच्छ रखते हैं, तापमान को नियंत्रित रखते हैं, अनेक पशु और पक्षियों के संरक्षक का काम करते हैं और वर्षा लाने में सहायक होते हैं।

मनभावन पर्यटन स्थल डलहौजी

अंग्रेजों ने कभी जिस जगह को सेनेटोरियम के लिए चुना था, आज डलहौजी के नाम से देश-विदेश के सैलानियों में विख्यात है। सेनेटोरियम की योजना पर काम करने वाले कर्नल नेपियर की रिपोर्ट पर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने यहां के बकरोटा, पोट्रयान, टीहरा, कथलग व भंगोर नामक पहाड़ी हिस्सों को चंबा रियासत के राजा श्री सिंह से खरीदने की एवज में रियासत के सालाना नजराने (कर) को 12 हजार रुपये से कम करके 5 हजार रुपये कर दिया था।

ब्रिटिश सरकार ने जल्द ही यहां सेनेटोरियम का निर्माण भी कर लिया। चूंकि सेनेटोरियम का निर्माण लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल में सम्पन्न हुआ था, इसलिए सर डोनाल्ड मेकलियोड की सिफारिश पर इस मनोरम स्थल को डलहौजी नाम दे दिया गया। ये फैसला 1854 में लिया गया था। बाद में यहां कंटोनमेंट की स्थापना की गई जो आज भी डलहौजी का हिस्सा है।

वक्त ने बीते डेढ़ सौ सालों में भले कई करवटें बदली हों पर डलहौजी की दिलकश फिजाओं की कशिश आज भी बरकरार है। देवदार व ओक की बहुतायत वाले खूबसूरत जंगलों की आगोश में बसा ये मनभावन पर्यटन स्थल सैलानियों के लिए किसी ख्वाबगाह से कम नहीं। मधुमास पर आए जोड़ों के लिए तो डलहौजी जन्नत की मानिंद है। चाहे बर्फ के अलौकिक संसार को करीब से महसूस करना हो या फिर जेठ के तपते दिनों में ठंडक भरे ताजा हवा के झोंकों का लुत्फ लेना हो डलहौजी से बढ़कर भला और कौन-सी जगह हो सकती है।

डलहौजी महज एक सैरगाह न होकर भारत की कई महान विभूतियों के प्रवास की गवाह रही है। जहां रवींद्रनाथ टैगोर के मन में महान कृति 'गीतांजलि' की रचना के अंकुर डलहौजी में फूटे तो वहीं नेताजी सुभाष चंद्र बोस की डलहौजी के सम्मोहन से अछूते नहीं रहे।

पंडित जवाहर लाल नेहरू, स्वतंत्रता सेनानी सरदार अजीत सिंह (अमर शहीद भगत सिंह के चाचा) व प्रख्यात चित्रकार मंजीत बावा यहां की आबोहवा के मुरीद रहे हैं। डलहौजी में वाकई ऐसी कशिश है कि मन बार-बार यहां आने को आतुर रहता है।

अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण डलहौजी को यहां के शिक्षक संस्थानों ने भी अब एक अलग पहचान दी है। अन्य राज्यों से आकर डलहौजी में शिक्षा प्राप्त करने सैकड़ों बच्चे हर साल आते हैं।

डलहौजी के मनमुग्ध कर देने वाले नजारे बॉलीवुड की कई फिल्मों में कैद हो चुके हैं। अगर यहां कुछ और आधारभूत सुविधाएं जुटा दी जाएं तो ये जगह न केवल फिल्म निर्माताओं के लिए आउटडोर शूटिंग की बेहतरीन व मनमाफिक लोकेशन्स बनेगी, बल्कि देश-विदेश के सैलानियों को भी नए आकर्षण दे पाएगी।

डलहौजी में मई-जून में आयोजित हुए 'कल्चरल बोनांजा' के अलावा बारह सालों के बाद दोबारा मनाए गए डलहौजी ग्रीष्मोत्सव ने यहां के पर्यटन व्यवसाय को उभारने में जो भूमिका निभाई है वह निश्चित तौर पर सैर- सपाटे के शौकीनों के लिए नया आकर्षण ले कर आएगी।

● रवि वर्मा

कुल्लू दशहरा...

(पृष्ठ 6 का शेष) नृत्य करते हुए गन्धर्व चित्रित हैं। कृष्ण लीला के कुछ चित्र भी पट्टिका में अंकित हैं। द्वार की पट्टिकाओं पर घुड़सवार और उपासक के चित्र भी अंकित हैं जो राजा बहादुर सिंह के हो सकते हैं।

नवग्रह, गंधर्व, देव प्रतिमाएं तथा पुष्प-पत्र आदि की नक्काशी उत्कृष्ट कोटि की है जो इस पैगोडा शैली के मंदिर की काष्ठ कला, काष्ठ वास्तुकला को गरिमा प्रदान करती है। मंदिर के गवाक्षों में काष्ठकला चित्रित हुई है। एक गवाक्ष में मैथुन में प्रवृत्त युगल की कृति उल्लेखनीय है।

मुख्य मंदिर के अतिरिक्त लकड़ी के तख्तों से छाया एक छोटा मंदिर भी है। इस मंदिर के ऊपर तीन त्रिशूल स्थापित हैं। यह मंदिर वर्तमान पैगोडा से पहले का है। यह मंदिर त्रिजुगीनारायण दयार की परवर्ती कला के विकास का उदाहरण है। मंदिर में पहली से तीन ज्येष्ठ तक ढूंगरी जाच मनाई जाती है।

व्यंग्य

अपने सामान की जिम्मेदारी

पहले जब, आदमी की जान खतरे में होती थी तथा बड़े-बड़े तालाबों, नदियों, अंधी झीलों एवं समुद्रों के किनारे शिकार की ताक में रेंग/रेल रहे भूखे मगरमच्छों, फुंकारते अजगरों, जहरीले सांपों, विषैले बिच्छुओं तथा तरह- तरह के आदमखोर दुर्दांत जंतुओं से सृष्टि की सबसे सुन्दर, बुद्धिमान, सबसे विकासशील, सबसे प्रगतिशील नस्ल आदमी को बचाने/बचाये रखने की भरपूर कोशिश की जाती थी, तब वह सभ्यता का संभवत: भला काल था। कदम-कदम पर फैले काल के विकराल विकृत नाना नामरूपों से इस धरती के सबसे समझदार प्राणियों की तब आदमी की हिफाजत कैसे की

डॉ. ओम प्रकाश सारस्वत

जाये। इस पर चिंतन होता था तथा धरा को कई प्रकार की जानलेवा लियामतों से कैसे छुटकारा दिलाया जाये। इस पर परम कारूणिक लोगों की महा पंचायतें जुटती थीं लोगों को तरह- तरह से डुगडुगी, नक्कारे, रेडियो, अखबारों के जरिये चेताया जाता था कि समाज में पग- पग पर असामाजिक तत्व इल्लियों की तरह बढ़ रहे हैं। अत: इनसे अपने-अपने बीजों को बचाओ। बाद में टीवी, मोबाइल के हरकत में आने पर उसकी सुरक्षात्मक उद्घोषणाओं एवं एसएमएस से भी लोगों को चेताया जाने लगा। किन्तु मूल सवाल, जस का तस बना रहा। वह समय के अंतराल में और भी विकराल होता गया। लोगों का आगाह किया गया कि लोग अपनी जान-माल, माल-असबाव के लिए स्वयं जिम्मेवार हैं। यह सूचना/संदेश जहां-तहां शहर के पेशाब घरों की गंदी दीवारों, गाड़ियों आदि के अंदर/बाहर, छतों पर भी लिखे जाते, जैसे परिवहन वाले की 'सवारी अपने सामान की खुद जिम्मेवार है' लिखते हैं। पर समय के दौर में आदमी ने स्वयं को पैना किया और सब प्रकार की चुनौतियों के लिए नुकीले अस्त्रों की तरह अपने को तैयार किया।

अब आदमी, अपनी रक्षा में सक्षम है। वह घड़ियालों, अजगरों एवं भयावह विपत्तियों से लड़ सकता है। वह जंगल के राजा पर हुक्म चला सकता है। वह समुद्र के तूफान को रोक सकता है और सुनामियों को डांट सकता है। वह गिरते उल्कापिण्डों को हाथ में थाम सकता है।

आज अपील जारी होती है कि मगरमच्छों को बचाओ, घड़ियालों की प्रजाति की रक्षा करो, खूंखार जंगली जीवों और हिंस्र सिंहों को नष्ट होने से रोका नहीं तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जायेगा। प्राकृतिक समरसता विछिन्न हो जायेगी। एक ही तरह की प्रकृति के जीव धरा पर रेंगते हुए दिखाई देंगे। जीवों- जीवों में होड़ा-होड़ा समाप्त हो जायेगी। अब आये दिन, वनराजों, गजराजों, मत्स्यराजों और नक्रसम्राटों पर विपदा आ पड़ती है। इनकी कुण्डलियों में मारकेश चल रहे हैं। परिणामस्वरूप एक दिन दुनिया से ये कूच कर जायेंगे और लोग इन्हें चित्रों और कोषों में देखेंगे।

दोस्तो, घबराने की कोई जरूरत नहीं। अब वे सब समुन्नत प्रजातियों में आकर अपने पुराने चोलों से मुक्त होकर, मानव की देहों/मनुष्य के शरीरों/रूपों में जन्म लेने गये हैं। जैसे पुनर्जन्म में आप, अच्छी/ योनि में भी पैदा हो सकते हैं, आपकी उन्नति/विकास हो सकता है, ऐसा ही कुछ इनके साथ भी है। मुझे तो लगता है कि हमारे बड़े-बड़े चिंतक, ऋषि मुनि ही विदेशों में जन्म लेकर वहां रम रहे हैं। यहां पर पंचाग्नि तापादि से भोगे कष्टों से मुक्त होकर, गुदगुदे बदनवाली कामिनियों के संग मन चाहा सुख भोग रहे हैं। लगता है यहां की महिलाओं के रिक्त पोषण गर्भगृहों को देखकर, ये सब ऐसा कह रहे हैं। फिर आप रोज देख ही रहे हैं कि अमुक स्थान पर अमुक महिला के, शेर की शक्ल का, हाथी की सूंड वाला, मगरमच्छों के रूप जैसा तो कभी दो सिरों वाले, कभी चार बाजुओं वाले, कभी चार मुंहों/दो मुंहों वाले सेंपल जातक पैदा हो रहे हैं। कभी-कभी कहीं-कहीं तो गाय, भैंस/ भैंसे, सूअर जैसे नवजात भी होने लग गये हैं। अत: अब इन/उन विचारकों परम कारुणियों को समझ लेना चाहिए कि भारत में पुनर्जन्म का सिद्धांत है। अत: ये सब अगले जन्म में स्वयं के सुधार हेतु किसी अच्छी योनि में जन्म लेकर, समुन्नत हो सकते हैं। और मैं समझता हूं कि आजकल, ये जो विदेशी संस्कृति में रंगे, छोहरे, छोहरियां, मैं न मानूं की मुद्रा में, घरों में हुरदंग करके मां-बाप को, बड़े आदरणियों को, तू कौन है का सवाल आंखों में लिये, नयनों से शर्म उतार कर कुछ भी किये दे रहे हैं, ये सब विदेशी अवतार हैं। अवतारों के लिए भारत सबसे निरापद और पुन:-पुन: वांछित देश है।

अब हमारे/पराय चिंतकों/चिन्तितों एवं उद्घोषकों से मेरा कहना है कि जी भर कर जियो। डरो मत। अगर ये जीव जंगलों, नदियों, चिड़ियाघरों, तालाबों, पोखरों, समुद्रों में नहीं मिलते हैं तो कोई बात नहीं ये अपने समुन्नत/ आत्म विकसित अवतारों/जन्मों में आपको भारत के ही कई ग्रामों, नगरों, कस्बों, महानगरों में मिल जायेंगे। बस इनकी शक्ल जैसे नहीं होगी, पर अक्ल/ सीरत और हरकतें सब पूर्ववत ही होंगी। आप यदि थोड़ी सी अक्ल लड़ायेंगे तो आप इनको सहज ही पहचान भी जायेंगे। वैसे ये आपको, किसी को भी अपना भोजन बनाते, अपना शिकार समझते, अपनी प्रजा मानते, और अपने लिए सारा हिन्दुस्तान खुला मैदान जानते हुए मिल जायेंगे। आदमियों-आदिमियों में फर्क करने वाले ये दया, करूणा, सहानुभूति तथा उपकार से परे होंगे। किसी की किडनी से, किसी के जिगर से, किसी के मस्तिष्क से बने ये इन्हीं अंगों का अपना कारोबार, अपना धंधा चमकाते हुए मिल जायेंगे। ये मनुष्य के मुखौटों में सम्पूर्ण क्रूरता के पूर्णावतार होंगे और मानव की जाति में पूर्ण पशुता के महावतार। आप इन्हें कोई भी भयानक से भयानक और परम से परम नरपिशाच, दानव, दैत्य, क्रूर, हिंस्र आदि कुछ भी नाम दे सकते हैं। बस, जरा खुद को बचाते रहिये। यात्रा में अपने सामान को संभाले रखने की तरह, खुद को बचाये रखने की जिम्मेदारी आपकी है।

अब आदमी, अपनी रक्षा में सक्षम है। वह घड़ियालों, अजगरों एवं भयावह विपत्तियों से लड़ सकता है। वह जंगल के राजा पर हुक्म चला सकता है। वह समुद्र के तूफान को रोक सकता है और सुनामियों को डांट सकता है। वह गिरते उल्कापिण्डों को हाथ में थाम सकता है।

कविता

सहते रहना

ऊंचे पर्वतों पर
लहराते देवदार
खिली धूप में
देते हैं
दिशा निर्देश
जीवन की राह में
कितना भी
आये तूफान
स्थिर रहना
दुर्भाग्य के
क्रूर प्रहारों को
सहते रहना।

अरुण कुमार शर्मा

लघुकथा

अवमूल्यन

बचपन में...करीब दस वर्ष का था, तब यह कहानी सुनी थी। दादी बताती थीं...एक रोज एक ऊंट अपने मालिक के हाथों से नकेल छुड़ाकर भाग निकला...।

यूं तो ऊंटहरा नेक इंसान था। ऊंट के चारा पानी की बढ़िया व्यवस्था रखता और क्षमता से अधिक काम भी न लेता। बस, ऊंट की मनमानी उसे जरा भी बर्दाश्त न थी। वह गर्दन दायें-बायें करता तो ऊंटहरा बेदर्दी से नकेल खींच लेता। कभी- कभी मालिक की यह हरकत ऊंट को बहुत नागवार प्रतीत होती। वह गुस्से से बलबलाने लगता और इसी के साथ मालिक का डंडा सटाक्...सटाक्... चल जाता था।

ऊंट भागता गया। उसकी दौड़ तब थमी, जब एक घूसर पहाड़ रास्ता रोककर खड़ा हो गया। शाम हो चुकी थी और थकान से उसका बुरा हाल था। उसने तलहटी की कंकरीली जमीन पर पांव पसार दिये।

सुबह हुई। ऊंट अंगड़ाई लेने के अंदाज में शरीर अकड़ाता उठ बैठा। उजाला बढ़ रहा था। उसने सब तरफ निगाह दौड़ाकर परिवेश का जायजा लेना आरम्भ किया। वह उजाड़ जगह थी। सूखी धरती पर दूर-दूर तक कुछेक छोटी बेजान सी झाड़ियां और झुलसी हुई घास।

यहां एक हफ्ते के अंदर ही उसकी हालत खराब होने लगी...चारा पानी की तलाश में भटकते हुए वह एकदम पस्त हो जाता था। बीच-बीच में उसे अपने ऊंटहरा का गांव याद आता। हरियाली से भरा-भरा...स्वच्छ जल वाली नदी...चहल-पहल...पक्षियों का कलरव...और यहां हवा तक गर्म और धूल से भरी हुई।

धीरे-धीरे कई दिन बीत गये। ऊंट की अच्छी दुर्गति हो चुकी थी। भूख-प्यास से परेशान चारों टांगें फैलाए धरती पर पड़ा था। उसे मरा जान कुछ गिद्ध उसके ऊपर मंडराने लगे। पंखों की फड़फड़ाहट से सचेत होकर उठ बैठा। उसने इन पक्षियों की तरफ मदद की आशा से देखा। याचना भरे स्वर में बोला, 'भाई गिद्ध! तुम सब बहुत दूर

सचित्रेश

तक देख लेते हो। मुझे किसी ऐसे स्थान का पता बताओ, जहां चरने के लिए पर्याप्त घास और पीने का पानी हो।'

एक बूढ़े गिद्ध को उस पर दया आ गई। उसने कहा, 'मेरे पीछे आओ।'

आसमान में आगे बढ़ते गिद्ध को रोकते हुए ऊंट ने पूछा, 'पहले यह बताओ, वहां आदमी तो नहीं रहते।'

गिद्ध इस बेतुके सवाल पर हैरान रह गया। बोला, 'जहां हरियाली और पानी होगा वहां आदमी तो रहेगा ही'

'तब मुझे नहीं जाना। मैं यहीं ठीक हूं।' कहते हुए ऊंट पुन: टांगें पसार कर लेट गया।

'मगर यहां तुम बहुत जल्दी भूख प्यास से मर जाओगे।' बूढ़े गिद्ध ने आगाह किया।

'कोई बात नहीं।' ऊंट ने आंखें मूंदते हुए गंभीरता से कहा, 'यही क्या कम है कि यहां मेरी नाक में किसी की नकेल न होगी।'

ऊंट की स्वातंत्र्य चेतना से मैं बचपन में रोमांचित हो जाता था। उसके लिए मन में आदर और मंगल कामनाएं छलक उठती थीं। ईश्वर से प्रार्थना करता था कि उस बंजर में खूब बरसात हो जाये और हरी-हरी झाड़ियां उग आयें...।'

अब मैं सेवा निवृत्त बूढ़ा हूं। किस्से कहानियां सुनने-सुनाने का जमाना नहीं रहा। बच्चे टीवी से चिपके आनन्द मग्न रहते हैं। सबसे बड़ी बात यह कि सयाने से लेकर बच्चे तक अपने मामले में बुजुर्गों का हस्तक्षेप नापसंद करने लगे हैं।

एक दिन बिजली नहीं थी, टीवी नहीं चल रहा था। मेरी दस वर्षीय नातिन ने कहानी सुनाने का आग्रह किया। मैंने उसे यही कहानी सुना दी और पूछा, 'कैसा रहा ऊंट का फैसला?'

'एकदम रद्दी और बेतुका।' नातिन ने जवाब दिया, 'मटर गश्ती के लिए जिंदगी दांव पर लगाने की गलती कोई महामूर्ख ही करेगा।'

यह तो मुझे पता था कि अब भावना के मुकाबले में यथार्थ का पलड़ा भारी हो चुका है। किन्तु जीवन की लालसा आजादी की भावना से इतना अवमूल्यन कर सकती है। यह

क्या आप जानते हैं?

प्रोटेम स्पीकर कौन होता है

भारत में लोकसभा के चुनाव के पश्चात जब इसकी पहली बैठक होती है तो इसकी अध्यक्षता करने वाले नये लोक सभा सदस्यों को शपथ दिलाने और साथ ही नये स्थायी लोक सभा अध्यक्ष का निर्वाचन कराने के लिए राष्ट्रपति अल्प स्थायी लोक सभा अध्यक्ष की नियुक्ति प्रधानमंत्री की सलाह से करते हैं। इस अल्पस्थायी अध्यक्ष को प्रोटेम स्पीकर कहा जाता है। इस सम्बन्ध में परम्परा यह है कि जो व्यक्ति सबसे लम्बे समय तक लोक सभा का सदस्य रहा होता है उसी को प्रोटेम स्पीकर नियुक्त कर दिया जाता है। इसे राष्ट्रपति द्वारा शपथ दिलाई जाती है। नये स्पीकर का चुनाव होने के पश्चात यह स्वत: ही पदमुक्त हो जाता है।

1. इस वर्ष मिनी प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन कहां होगा?
2. यूरोप का वह देश जहां राष्ट्रीय दिवस पर भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को मुख्य अतिथि बनाया गया था?
3. सर्वाधिक ग्रांड स्लैम एकल खिताब जीतने का रिकॅार्ड किस टेनिस खिलाड़ी के नाम है?
4. महात्मा गांधी द्वारा द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन कब प्रारम्भ किया गया?
5. औषधि के महान विशेषज्ञ चरक किसकी राजसभा में थे?
6. लोक सभा अध्यक्ष का चुनाव कौन करता है?
7. नैनो नॉलेज सिटी कहां पर स्थापित की जा रही है?
8. बाल फिल्म सोसाइटी की अध्यक्ष कौन हैं?
9. कौन से महाद्वीप में जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों सबसे कम है?
10. कार्बन क्रेडिट की संकल्पना किससे उद्भूत हुई?
11. यदि पंचायत भंग होती है तो किस अवधि के अंदर निर्वाचन होते हैं?
12. भारत में पहला नगर निगम कहां स्थापित हुआ था?
13. हिमाचल प्रदेश के किस युवा वैज्ञानिक को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा लाल बहादुर शास्त्री पुरस्कार दिया गया?
14. बौद्ध स्थल ताबो मठ कहां अवस्थित है?
15. हिमाचल प्रदेश में चिन्हित बिजली उत्पादन क्षमता कितनी है?
16. हिमाचल प्रदेश में डल झील कहां स्थित है?

प्रस्तुति-शमा राणा

उत्तर-1. नीदरलैण्ड, 2. फ्रांस, 3. रोजर फेडरर, 4. 1932 में, 5. कनिष्क, 6. लोक सभा के सदस्य, 7. चण्डीगढ़, 8. नफीजा अली, 9. यूरोप, 10. क्योटो प्रोटोकॉल, 11. 6 माह, 12. मद्रास, 13. डॉ. प्रदीप शर्मा, 14. लाहौल स्पीति, 15. 20392.07 मेगावाट, 16. धर्मशाला।

स्वास्थ्य

लिवर के प्रति सजग होना जरूरी

मनुष्य के शरीर में जिसमें वायरस का संक्रमण हो वह स्वयं ठीक होने में संक्षम नहीं है। वह तभी ठीक होता है यदि मनुष्य में पहले से टीका द्रव्य लगा हो, किसी भी वायरस के प्रति प्रतिरोधक शक्ति उसके शरीर में तभी बन पाती है।

यकृत (लिवर) मनुष्य का महत्वपूर्ण अंग है। प्रत्येक महत्वपूर्ण अंगों से बना मानव शरीर जिसमें दिल, फेफड़े, यकृत, किडनी, आंखें एवं दिमाग विशेष रूप से संवेदनशील भी है। जिस प्रकार से ये विभिन्न अंग विशेष कार्य करते हैं मनुष्य को भी चाहिए कि वह अपने शरीर के प्रति सजग होकर सेहत का विशेष ध्यान रखे।

लिवर के प्रमुख कार्य हैं-

-काबोहाइड्रेटस, वसा एवं प्रोटीन का अपाचन एवं कायान्तरण करना।

-कोलेस्ट्राल बाइल एवं प्रोरथेरामबिंन का संश्लेषण करना।

-कोलेस्ट्राल एवं विषैले पदार्थों का मलोत्सर्जन करना।

एंटी बॉडीज बनाने में सहायक।

आयरन, वसा, विटामिन-ए एवं डी, ग्लाइसोजन का संरक्षण करना।

मनुष्य के लिवर को गंदे पानी पीने से तथा संक्रमित सूईयों के प्रयोग से खतरा है। मनुष्य अगर खुली बावड़ी जिसमें ब्लिचिंग पाऊडर न डाला गया हो या उसे साफ न किया गया हो का गंदा पानी पी ले तो उसे हैपेटाइटिस यानि पीलिया होने का खतरा भी बढ़ जाता है। पीलिया रोग किटाणुओं द्वारा फैलता है एवं स्वयं ठीक हो जाता है। इसके लिए मनुष्य को चाहिए कि ग्लूकोज एवं पानी का अधिक मात्रा में सेवन करें।

पीलिया होने के मुख्य लक्ष्य-

-भूख न लगना।

-वमन एवं जी मचलाना।

-पेट में दर्द विशेष रूप से यकृत के चारों ओर।

-एकदम पीला मूत्र एवं आंखें एवं शरीर पीला होना।

-मांसपेशियों में दर्द।

-त्वचा एवं आंखों की पुतलियां पीली होना।

हैपेटाइटिस यकृत (लिवर) के प्रदाह को कहा जाता है। अगर पीलिया रोग ठीक न हो रहा हो तो कई विभिन्न प्रकार के वायरस (सूक्ष्म जीवाणु) मिलकर वायरल हैपेटाइटिस की उत्पति करते हैं। ये वायरस हैं- हैपेटाइटिस-ए, बी, सी एवं डी और ई।

हैपेटाइटिस-ए: मूल रूप से संक्रमित व्यक्ति के मल से दूषित खाद्य जल के जरिये फैलता है। इससे बचना आसान है। स्वच्छ जल पीयें या पानी को उबालकर ठण्डा करके ही पीयें।

हैपेटाइटिस-बी और सी: सक्रमित रक्त के सम्पर्क में तथा जन्म के समय शिशु में माता द्वारा फैलता हैं संक्रमित व्यक्तियों के साथ सैक्स या समलैंगिक पुरुषों, महिलाओं, इंजेक्शन द्वारा ड्रग्स लेने आदि, स्वास्थ्य सेवा से जुड़े कर्मचारी, रक्त के सम्पर्क में होने से उक्त वायरस फैलने की संभावना ज्यादा होती है।

हैपेटाइटिस डी: यह सक्रमित रक्त के सम्पर्क में आने से फैलता

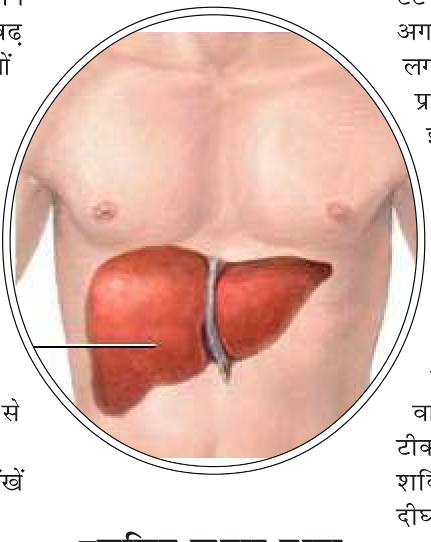

सललित कुमार गुप्ता

है। यह रोग केवल उन लोगों में फैलता है जो पहले संक्रमित रोगी के सम्पर्क में आ जायें। यह वायरस विश्व भर में सिरोसिस ऑफ लिवर तथा हैपाटोसेलुलर कार्सीनोमा (कैंसर) नामक विकारों की उत्पति के लिए प्रमुख कारण है।

हैपेटाइटिस बी, सी का निदान आमतौर पर सिरोलॉजी टेस्ट के उपरांत ही निर्धारित किसी विशेषज्ञ चिकित्सक द्वारा ही किया जाता है। इसके लिए एचबीएसएजी टेस्ट जो कि मेडिकल कॉलेज स्तर पर संभव है किये जाते हैं। अमूमन हैपेटाइटिस बी, सी वायरस से संक्रमित व्यक्ति चाहे वे अल्पकालिक संक्रमण से ग्रस्त हो या दीर्घस्थायी संक्रमण से, पहचान के लिए एंटीबॉडीज टेस्ट होता है।

मनुष्य के शरीर में जिसमें वायरस का संक्रमण हो वह स्वयं ठीक होने में संक्षम नहीं है। वह तभी ठीक होता है यदि मनुष्य में पहले से टीका द्रव्य लगा हो, किसी भी वायरस के प्रति प्रतिरोधक शक्ति उसके शरीर में तभी बन पाती है। जैसे टैटनेस से बचाव के लिए टैटनेस का टीका द्रव्य यह टीका अगर एक माह के अंतराल पर दो लगाये जायें तो मनुष्य तीन वर्ष तक प्रतिरोधक शक्ति प्राप्त करता है। इसी तरह पोलियो वायरस के लिए पांच वर्ष के बच्चों में दी गई पोलियो की दो बूंदे बच्चों को पोलियो वायरस से बचाने में सक्षम है। ठीक इसी तरह अगर हैपेटाइटिस बी या सी का टीका द्रव्य लगाया गया हो तो मनुष्य हैपेटाइटिस बी या सी के वायरस से बच सकता है। अगर टीका न लगा हो एवं प्रतिरोधक शक्ति क्षीण हो जाये तो मनुष्य दीर्घकालीन रोग से मर जाता है। प्रत्येक वायरस के उपचार हेतु उसका टीका द्रव्य मनुष्य को लगवाना अति आवश्यक है या फिर बचाव हेतु जानकारी अति आवश्यक है।

फिर भी मनुष्य पीलिया रोग से निजात पा सकता है। अगर सुरक्षित पेयजल का प्रयोग करे अथवा 20 मिनट तक उबली हुई सूई का प्रयोग करे या रोग होने पर पानी एवं ग्लूकोज की मात्रा जिसमें फलों के रस, सिकंजी या तरल पदार्थों का ज्यादा मात्रा में सेवन करे।

लघुकथा

वसीयत

अनुराग सेवानिवृत्ति पाने के बाद सोचने लगे कि अब उनका समय कैसे कटेगा? उन्होंने घर के पास ही एक छोटी सी नौकरी ढूंढ ली। शाम को घर आते तो बच्चों से खेलकर समय बिताते। फिर घूमने निकल जाते। ये दिनचर्या काफी दिनों तक चलती रही। परन्तु सर्दी की एक शाम उन्हें काफी परेशानी भरी लगी। उन्होंने अपनी पत्नी को बुलाया व कहा कि उनके दोनों पुत्र काफी अच्छे हैं। रात दिन उनका ध्यान रखते हैं। समय का क्या पता कब जिन्दगी की शाम हो जाये। अच्छा है अपने रहते वो इस मकान, पैसे का फैसला कर दें।

उन्होंने सारी जायदाद दो बराबर हिस्सों में बांट दी। अनुराग की तबीयत ज्यादा खराब हो गई और वो स्वर्ग सिधार गये। उनकी पगड़ी होते ही दोनों बहुओं को घर छोटा पड़ने लगा। उन्हें अपने लिये, बच्चों की पढ़ाई के लिए, ड्राइंग रूम, स्टोर की अलग-अलग आवश्यकता महसूस होने लगी। बेचारी मां के लिए घर में एक कोना न रहा। सुशीला अपने नाम की तरह सुशील थी। वो सारा खेल अपनी सूनी आंखों से देखती रही और आखिर ऊपर टीन की छत वाले स्टोर में चली गई।

इतने बड़े घर में उसे वहां जाने से किसी ने नहीं रोका, उसे अफसोस था सिर्फ उस वसीयत का जो अनुराग ने की थी।

-शबनम शर्मा

(बाल गजल)

कविता लिखना

कविता लिखना, बहुत जरूरी।
मिलती इससे सबर-सबूरी।।

छुक-छुक चलती मन की गाड़ी।
कविता लिखने की मजबूरी।।

सच्चाई को पकड़े रहना।
कभी न करना जी-हजूरी।।

सदाचार को पल्लू बांधें।
छोड़ें बातें गैर जरूरी।।

अकड़ जकड़ की पकड़ हमेशा।
ले डूबेंगी तुम्हें गरूरी।।

कविमन भावुक, प्रेम-नेम में।
अटल हमेशा, यह दस्तूरी।।

नम्र बनें और सीखें, समझें।
मिले त्याग की सदा सरूरी।।

कविता, गायन, नर्तन, वादन।
प्रेरक बनते बहुरि-बहूरी।।

कहता सदा 'पीयूष' पपीहा।
चाहत में ही राहत पूरी।।

बच्चो! माता-पिता के मन की।
आशा रहे न कभी अधूरी।।

डॉ. पीयूष गुलेरी

बच्चों की आदर्श अध्यापिका बनें

नीना मित्तल

हालांकि घर बच्चे की प्रथम पाठशाला और मां प्रथम शिक्षिका होती है पर बच्चा जब पहली बार स्कूल जाता है और वहां अपनी टीचर यानि महिला अध्यापिका को देखता है तो न जाने किस आकर्षण से वशीभूत होकर वह उसके व्यक्तित्व में समाता चला जाता है। ढाई-तीन साल तक घर में मां के सम्पर्क में रहने वाला बच्चा अब अपनी मैम का दीवाना हो जाता है। वह उसकी हर हरकत, हर हाव-भाव, हर बात व पहनावे को बड़े ध्यान से देखता और सुनता है। जाहिर है जिसे पसन्द किया जाता है उसकी बातों का असर भी गहरा और जल्दी होता है। उसके द्वारा कही हर बात बच्चे के लिए पत्थर की लकीर होती है। अत: हर अध्यापिका का यह कर्तव्य बनता है कि वह बच्चों के सही मार्गदर्शन के लिए ईमानदारी से विषय की जानकारी रखकर बच्चों को स्वस्थ ज्ञान उपलब्ध कराये। इसके साथ-साथ अपनी छवि को प्रभावशाली बनाने के लिए एक गरिमामय व्यक्तित्व की मालकिन बनने का प्रयास करें। इसके लिए कुछ बातें गौर करना बेहद आवश्यक है:-

-सर्वप्रथम वह जो परिधान पहने वह उसकी आयु, रंग-रूप व कद-काठी के अनुरूप हो। दूसरों की देखा-देखी वस्त्रों का चयन न करें।

-भारतीय परिवेश में साड़ी को सर्वाधिक गरिमामयी और सौम्य पहरावे का स्थान प्राप्त है। अत: यदि अध्यापिका साड़ी में स्कूल आती है तो उसका व्यक्तित्व निखर कर उभरेगा।

-साड़ी भड़कीली और भारी भरकम कदापि नहीं होनी चाहिए क्योंकि इससे बच्चों का ध्यान उनकी अपेक्षा उनके कपड़ों पर रहेगा और इससे बच्चों की पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न होगा।

-पहरावा चाहे सलवार सूट का हो या साड़ी का, हमेशा शालीनता व मर्यादा की सीमा में होना चाहिए।

-मेकअप बिल्कुल हल्का होना चाहिए। ज्यादा लिपा-पुती करके स्कूल जायेंगी तो बच्चों का आदर्श होने के बजाय हंसी का पात्र हो जायेंगी।

-भारी- भरकम गहनों से परहेज करें।

-यदि आपको सजने-संवरने का शौक है तो स्कूल के बाद पूरा कीजिये। खुद भारी-भरकम शृंगार करके आप छात्राओं को विद्यार्जन काल में फैशन करने के लिए मना करने का नैतिक अधिकार खो देंगी।

-न तो कलाई भर-भरकर चूड़ियां पहनें और न ही बजने वाली पायल क्योंकि इनकी आवाज से विद्यार्थियों का ध्यान बार-बार आपकी तरफ जायेगा और वे विषय पर एकाग्रता से मनन नहीं कर पायेंगे।

-साड़ी का पल्ला या चुन्नी पिन-अप करके रखें नहीं तो वह बार- बार गिरेगा और उसे संभालने के चक्कर में पढ़ाने का अमूल्य समय व्यर्थ में ही नष्ट हो जायेगा।

-अपने नाखून काट कर रखें। आपके बढ़े नाखून आपके द्वारा दी गयी नाखून काटकर रखें की शिक्षा पूर्णत: बेअसर हो जायेगी।

-बालों को बांध कर रखें। यदि खुले रखने भी हों तो पढ़ाते समय उन्हें बार- बार झटका देकर पीछे न करें। बच्चों को कभी भी यह एहसास न होने दें कि आपका ध्यान बालों पर ज्यादा पढ़ाने में कम है।

-अपने साथ एक साफ सुथरा रुमाल अवश्य रखें। चॉक वगैरह हाथ पर लग जाने पर साड़ी के पल्लू या चुन्नी से न पोंछें।

-पोशाक के अलावा जूते-चप्पलों के प्रति भी सजग रहें। यह सोचकर कि पैरों पर किसकी नजर जायेगी, कभी भी टूटी-फूटी चप्पल न पहनें। बच्चे आपको सिर से पांव तक निहारते हैं। टूटी या बदरंग चप्पल आपकी गरिमामय छवि को पलभर में ही चकनाचूर कर देगी।

याद रखें, आप बच्चों की आदर्श हैं और वे हर कदम पर आपका अनुसरण कर रहे हैं। उनमें अच्छे संस्कार और आदर्श भरना आपका नैतिक कर्तव्य है और अपने व्यवहार तथा शालीन पहरावे से आप इसमें खरी उतरेंगी।

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

fxfjjkt lkIrkfgd f'keyk] 23&29 flrEcj] 2009

तुसें ग्लाणां कि मैं क्या टापक ले करी बैठी गिआ। ब्याह हुंदेया ही लाड़ा-लाड़ी अपणी नोईं गृहस्थी बसांदे न। जिणां जो तां थोड़ा-बहुत अनुभव है, तिणां जो तां कोई परेशानी नी हुंदी। अपणियां जिम्मेवारियां दा थोड़ा-मता ज्ञान, अम्मा-बापुये जो अवश अपणी औलादा जो देणा चाईदा है। केई तां मैं जहे मां-बुढ़े भी दिखे, लाड़ी-लाड़ा भी जाचे; जिणां तो जरा-माशा भी अपणियां जिम्मेवारियो दा अहसास नसौ:। क्या होया, जिस बेला सिरे पर पौणी। अपूं ही न्याणे समझी जांगे। नोये लाड़ी-लाड़ा तां सुफणेयां दे सनसारे च भटकदे रैंह्दे न। जाह्ल गृहस्थी दी चक्की चलणा सुरू तासं नानी चेते आई जांदी। मत्थे पर परसीना चली पौंदा। केई घरां च दिखणे च आया है कि नोइयां लाड़िया जो दाल-रोटी ते सिवा किच्छ औंदा नीं। पिरी दिखणां पौंदा होटलां दा मुंह। पर किन्ने दिन?

घर-गृहस्थी दा भार जाह्ल सिरे पर औंदा है, केई तां कम्म खुसिया कन्ने नपटाई लैंदियां, कन्ने केई तां सिर-दर्दी समझदियां। केई-कुड़ियां तां चुल्हे-चौके आले पासें दिखेया भी नीं हुंदा। मां-बुढ़े भी चांहदे कि मुन्ने तिणां जो बी किच्छ भेजे। पर मुन्नूये दा अपणा गुजारा नीं हुंदा। ब्याहे परंत केई घरेलू समस्या पैसे दी कमी करी कैं पेश औंदिया न। गृहस्थी च इयां तां मर्द- तीमिया दूईं जणेयां दी जिम्मेदारी बणी जांदी है। पर औरता दा गृहस्थी सुआरने च मता हत्थ रैंह्दा है। आमदन-खर्चे दा लेखा-जोखा सै: ही रखदी है। बचत बी उसा दे हत्थ है। फजूल खर्ची लापरवाही कन्ने अनुभव दी कमी करी कैं हुंदी है। नोये लाड़ा-लाड़ी पैहलें पैहल तां खूब अन्ने-बाहू खरच करी दिंदे न। नौकरां ते कम्म; उलझनां ल्योंदा है।

मैं समझदा कि घर-गृहस्थी आस्ते हर कुड़ी-मुंडूये जो तियार होणा चाईदा है। माता-पिता जो बी इस च जोगदान देना जरूरी है। कुड़ी चाहे किन्ने अमीर खानदान ते होये उस जो नोईं गृहस्थी च दिलचस्पी लैणी चाईदी है। छोटी जही गृहस्थी जो सुआरणा, लाड़े जो मन भौंदी चीजां बणाई करी देणियां, घरे दियां चीजां जो संभालना, लाड़े दिआ आमदना च संतोष करणा ही सुखी गृहस्थी दियां नशाणियां न। जाहुले ताई दूये जणे कल्ले न, बड़िया बेफिक्रिया कन्ने खर्चा हुंदा है। दिखावे दी भावना जयादा रैंह्दी है। घुमना-फिरना, पिक्चर, रेस्टोरेंट जाणे पर बिना सोचे-समझे खारचा करी दित्ता जांदा है। इस पीरियड दा अपणा अलग महत है। मौज-मस्तिया आले दिन। पर पिरी बी इक हदा अंदर खरच होणा जरूरी है। खर्चे ज्यादातर भावनां पर ज्यादा हुंदे न। जरूरत तां हुंदी ही नईं। थोड़ी-मती बचता दी आदत; बादे च बड़ी खरी लगदी। बच्चेयां होणे तक बचत कीत्ती जाई सकदी है।

ऐबी गल्ल ठीक है कि जुआणिया च खाह्दा-पीत्ता पची जांदा है। चटपटा, बजारे दा बी खाह्दा जांदा है। घीऊ, मखन, फल, मेवे, सब्जियां, साग, दुध सबो-किच्छ सेवन करणा चाईदा है। इस बेला दा खाह्देया बुढ़ापे बेला कम्में औंदा है। पौष्टक भोजन लेणे आलियां लाड़ियां जो बमारी नी घेरदी। इस च कंजूसी नी कीत्ती जाये तां बेहतर। मौसम दे फल जरूर चखणे चाईदे। नोईं गृहस्थी बसाने पर लाड़े जो शौक हुंदा कि अपणे यारां-मित्रां जो भाभिया दे हत्थे दियां बणियां चीजां खुआं। पर ऐह जरूरी है कि मित्रां-दोस्तां जो मता

● रजनी कांत

लेख

गृहस्थ जीवण

न सद्देया जाये। इक हदा तक ही। गृहस्थी दा समान, चीज-बस्तां खुद ल्योणे दी आदत पाई जाये। दुकानदारां पर ज्यादा निर्भर न रिहा जाये। जरूरी चीजां लेणे ताईं किरस मत करा। महीने दा बजट दूये जाणे तिआर करण। चादर दिखी पैर पसारे जाण तां क्या मजाल कि बजट खराब होये। जरूरी है कि थोड़ी-मती बचत बी कीत्ती जाये। फजूलखर्ची जरा घट्ट कीत्ती जाये। जित्थू कंजूसी करणी पोये तां कोई हरज नीं।

कोई चीज-बस्त बेकार न जाये, फजूल खर्च न होये अपणे कपड़े खुद धोणे दी आदत पाई जाये, छोटे-मोटे सधारण कपड़े लाड़ी खुद सीये। नौकरां पर ज्यादा निर्भर न रिहा जाये। बजारे च कोई चीज दिखी कन्ने झट लेई लेई। ऐह् बी ठीक नीं। जरूरत मुताबक हंडिये। थोड़ा-थोड़ा खाइये, पिरी चुल्ही मुंअ जाइये। सयाणे इयां नी गलांदे। खाली बगते च जे गृहणी कोई कम्मा सीखी लै:, तां सूईने पर सुहागा। दिल बी लगी जाणां। कन्ने हत्थ बी खुली जाणां। आलसे च लेटे रैह्णा बगत गपां च कटणा, इयां ससतिया कताबां पढ़ी छडणियां ठीक नीं। कोई शौक पाली लै: गृहणी। कढ़ाई, बुनाई, पेंटिंग च दिल लाये। जे खरी पढ़ी-लिखी है तां घरे च कलासां सुरू करी दिये:। घरेलू चीज-बस्तां जो इक दिन धुप्प लगाओ, कमरे दियां सफाइयां, अलमारियां, बक्से ठीक करने, बैठका जो नोआं रूप देणां नोआं शुगल होई सकदा है।

नोईं गृहस्थी च केईं उलझनां, रूकावटां औंदिया न। कम्म न करणे दी आदत थकावट ल्योंदी है। खिज बी औंदी है। दूईं जणेयां जो प्यार कन्ने सहयोग देणा चाईदा है। गलतियां जो नजरअंदाज करणा ही बेहतर रैह्ग। मती तू-तू मैं-मैं गृहस्थी जो खराब ही करदी है। नोइयां गृहणिया जो पड़ोसी माता, भैणा ते मदद लैणे च नीं झिझकणा चाईदा। सारेयां कन्ने छैल मिठ्ठे सरबंध बणाणे चाईदे न। मने ते संतोखी लाड़ा-लाड़ी ही सुखी रैंह्दे न। थोड़ी औंदरसा च खरी गृहणी गृहस्थी चलाई जा सकदी है। कामकाजी होई कैं सै: शैद ओह सुख हासल न करी सके। इणां सुखां जो पाणे दा मूलमंत्र जिस नारा समझी लिआ सै: पूरी उम्र सुखी, कामजाब, संतोखी गृहस्थ जीवन जी सकदी है।

कबता

जिन्दगी होर मौत

सूरजा री एक किरण
रोशनदाना रे रस्ते
मेरे कमरे री कान्धा पर
आई कने बैठी गई।

थोड़ी देरा ते बाद से
मेरी लाईब्रेरिया री किताबा पर
कोरडा,
उठक-बैठक होर–
लूका-छुपी खेलदी लगी।

चहुआ खेलदी-खेलदी
से कधी मेरे कमरे रे फर्सा पर
आई कने पसरी गई
पता भी नी लगया...

तेथी ते सरकदी-सरकदी
चुपचाप बिल्लिया साही हल्के-हल्के
फाहोके पंजया कने चलदी-चलदी
दरवाजे री देहरिया तक जान्दी–
मैं से देखी...

पर फेरी चाणचक ही
से किरण जिहां जे–
मिलखासिंह बणी कने
बस उड़दी ही चली गई...
हाऊं ता देखी भी नी सकया...

● आचार्य भगवान देव 'चैतन्य'

निक्की कथा

खरा करगे ता खरा पाहंगे

इक बेर दुई कुत्ते गंगा नहांदे चली रे थे। स्यों आफू बिच गलांदे लगी रे थे जे कुत्ता हे कुत्ते रा बैरी हुआं कने आफू बिच बैठी के खाई बिनी सकदे। तिनहें दुहीं आफू मिंझ बचार कित्तेया जे एक रोटी खांदा चली जाओ जट्टा रे घरा कने दूजा चली जावे पण्डता रे घरा। जट्ट होर पण्डता रे घर नेड़े-नेड़े थे। ताहण तिन्हा री कसीमां ताईं इक कुत्ता चली गेया पण्डता रे घरा। हाली सैह पण्डता रे आंगणा खड़ी रा हे था कि पण्डते एक जोर रा ढमराला तेसरे तरीकड़ा पर सटेया। कुत्ते रा तरीकड़ भज्जी गेया बचारा क्लाऊं-कलाऊं करदा सुले-सुले पीड़ा के करलांदा चली गेया। दूजा कुत्ता जट्टा रे घरा पूजी गेया। तिने देखेया जे आंगड़ा पर खीरा रा कड़ाह रखी रा था। कुत्ते कड़ाह परा हे मुंह पाईता। जट्टे कुत्ता देखेया कने भूखा जाणी कने तिने सारी खीर आंगणा सटी ती। ''लै आरा कुत्तेया खूब खा-मौज करा।'' दूध भतेरा म्हारे घरा मैं होर बणाई लैणी। तिने कुत्ते खूब मौजा के खीर चपलयासी-चपलयासी खादी होर रज़ी के चली गेया।

अगे जे पैण्डे परा दूहें कुत्ते मिली गए। आफू बिच गलांदे लगे। इक कुत्ता बडी पीड़ा के हंडिया करां था तिने क्या देणी थी पर तरीकड़ भानी ता। तिने दूजे कुत्ते री खीर खाणे री गल सुणी के जट्टा री खूब प्रशंसा

कित्ती। होर गला जे तिसजो आपणी पीठी बठयाली गंगा तक लई चल। दूजे कुत्ते तेहड़ा हे कित्तेया दोनों जणे गंगा पूजी गए। दूहें गंगा नहाई के धनभाग हुई गए। फिरी क्या हुआ जे स्यों मरी गए होर धर्मी राज वाले पूजी गए। तिन्हा री विदकथा सुणी के धर्मी राजे गलाया। तेरा तरीकड़ा पण्डते भानेया तेसरा बी तेहड़ा हे भजणा। तूं दूजे जन्मा तेसरा मठा हुणा। जेबे तुध 19 वर्षा रे हुणा ता तुध मरी जाणा कने पण्डता रा तरीकड़ आपू भजणा। कने दूजा कुत्ता जट्टा रा मठा हुणा। जट्टा जो खूब सुख-शत मिलणा। ता जी तेहड़ा हे होया। इक कुत्ता पण्डता रे घरा मठा जम्मेया कने दूजा कुत्ता जट्टा रे घरा पुत्र जम्मेया।

ताजी अग्गे क्या होया जे जेबे ब्राह्मणा रा मठा 19 वर्षा रा हुई गेया ता से एक ध्याड़ चाणचक मरी गेया। बाह्मणा रा रोई-रोई बुरा हाल हुई गेया तिने कमर बान्ही लैया होर तेसरा ता तरीकड़ हे भज्जी गेया। तेसरा मठा मड़थाना फुकी दितेया। सब दाहू आप-आपणे घरा चली गए। पर जी पण्डत हाली बी तेथी हे पूठा पईरा था। जट्ट बी आपणे मठे कने पण्डता जो सांत्वना-तसल्ली देंदा चली पेया था। तिने आपणे मठे कने गलाया जे पण्डता जो शांत-सम्हाला री गल्ला गलाई आइएं। तां तिने मठे गलाया जे बापू इने पण्डते पिछले जन्मा रे कुत्ते जो रोटी नी दित्ती उलटे तिसजो मारी तरीकड़ भानी दितेया था होर तैं कुत्ते जो खीर खुवाई थी कि तेबे हाऊं बी कुत्ता था। एभे 19 वर्षा बाद से मठा जम्मी रा कुत्ता मरी गेया ता पण्डता रा तरीकड़ आफू भज्जेया। बापू तैं कुत्ते जो प्यारा के खीर खुवाई थी। सैह कुत्ता हाऊं हुण पुत्र रूपा बिच जम्मी रा। हुण मांह तेरी खूब सेवा करनी। तूहां जो खूब सुख होर शांति मिलो। जट्टा भला लपोखणा हे था।

● कृष्ण चन्द्र महादेविया

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में उत्तर भारत लोक न त्य समिति, भाषा एवं कला विभाग तथा चारू कैलस न्यास द्वारा आयोजित १३वीं अंतरराष्ट्रीय व अखिल भारतीय महिला लोक न त्य प्रतियोगिता में भारतीय विद्या भवन, नाबियाड (गुजरात) को प्रथम पुरस्कार पुरस्कार प्रदान करते हुए

महिला सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता

उत्तर भारत लोक नृत्य समिति, भाषा एवं कला विभाग तथा चारू कैसल न्यास द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 13वीं अन्तर्राष्ट्रीय एवं अखिल भारतीय महिला लोक नृत्य प्रतियोगिता गत दिनों गेयटी थियेटर शिमला में सम्पन्न हुई, जिसमें देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों एवं विदेशों से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल जो समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे, विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। मुख्य मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार महिला सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है तथा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेक कार्यक्रम कार्यान्वित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण को हर कार्यक्रम में प्राथमिकता दी जा रही है प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण प्रदान करने के प्रति वचनबद्ध है। मुख्य मंत्री ने शिमला में इस पांच दिवसीय महिला लोक नृत्य प्रतियोगिता को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए आयोजकों को बधाई दी तथा आशा व्यक्त की कि अन्य संगठन को इससे प्रेरणा मिलेगी और वे भी महिला सशक्तिकरण में आगे आएंगे। प्रथम पुरस्कार के रूप में भारतीय विद्या भवन नाबियाड गुजरात को स्वर्ण ट्रॉफी तथा नकद पुरस्कार, बी.एम.ई. स्कूल बांगलादेश एवं दिल्ली पब्लिक स्कूल सोनीपत को द्वितीय पुरस्कार के रूप में 5-5 हजार रुपये तथा ट्रॉफिया प्रदान कीं।

कनिष्ठ वर्ग में सेंट ल्युक स्कूल सोलन को प्रथम, डी. ए.वी. स्कूल फरीदाबाद को द्वितीय तथा ब्राह्मी देवी पब्लिक स्कूल को द्वितीय पुरस्कार दिया गया। सभी प्रतिभागी टीमों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। वरिष्ठ श्रेणी में जे.पी. पब्लिक स्कूल विद्यानगर अनूप शहर को प्रथम, आर.के.एम.वी. शिमला को द्वितीय तथा राजकीय महाविद्यालय सीमा को तृतीय पुरस्कार दिया गया। चार अन्य महाविद्यालयों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ राज्यपाल श्रीमती प्रभा राव ने किया।

नशा निवारण प्रतियोगिताएं आयोजित

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग ज़िला सिरमौर द्वारा गत दिनों खण्ड स्तरीय नशानिवारण पर भाषण, चित्रकला और नारा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन ज़िला लोक सम्पर्क अधिकारी कार्यालय में किया गया। इन प्रतियोगिताओं में लड़कियों का दबदबा रहा। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न स्कूलों के 34 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

भाषण प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में रा0व0मा0पा0 बनकला की कुमारी दीक्षा प्रथम, रा0व0मा0पा0 मोगीनन्द के ईमरान द्वितीय तथा एवीएन स्कूल की कुमारी शिवानी तृतीय स्थान पर रही। इस प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में राजकीय उच्च विद्यालय सैनवाला की कुमारी सुमन प्रथम, एवीएन नाहन की कुमारी नैना द्वितीय तथा रा0छात्र व0मा0पा0 नाहन के शुभम तृतीय स्थान पर रहे।

चित्रकला प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में एवीएन स्कूल की कुमारी रचना राणा प्रथम, रा0छात्र व0मा0पा0 नाहन के दिनेश मारिया द्वितीय तथा रा0व0मा0पा0 मोगीनन्द की कुमारी ईसराना तृतीय स्थान पर रही। इसी प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में डीएवी नाहन की कुमारी दिव्या ठाकुर प्रथम, एवीएन के मनोज शर्मा द्वितीय तथा रा0छात्र व0मा0पा0 नाहन के दिनेश शर्मा तृतीय स्थान पर रहे।

नारा लेखन प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में रा0व0मा0पा0 बनकला की कुमारी दीपिका प्रथम, एवीएन की कुमारी साक्षी अग्रवाल द्वितीय तथा रा0व0मा0पा0 मोगीनन्द की कुमारी बीना तश्तीय स्थान पर रही। इसी प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में एवीएन के वासिफ अली प्रथम, रा0व0मा0पा0 सुरला के अनुराग पुंडीर द्वितीय तथा रा0उच्च विद्यालय सैनवाला के हिमांशु कश्यप तृतीय स्थान पर रहे। इसी प्रकार खण्ड स्तर की प्रतियोगिताएं वरिष्ठ कन्या माध्यमिक पाठशाला पांवटा साहिब में करवाई गई। जिसमें एसडीएम पांवटा साहिब श्री मनमोहन शर्मा ने विजेताओं को ईनाम बांटे तथा नशे की बुराईयों से बच्चों को अवगत करवाया। भाषण प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में रा0कन्याव0मा0पा0 पांवटा की दिवयानी प्रथम, कोलर स्कूल के सुधीर द्वितीय तथा भगानी की कुलवन्त कौर तृतीय स्थान पर रही। कनिष्ठ वर्ग में भगाणी की रतिमा पहले, पांवटा साहिब की रिंकी दूसरे स्थान पर रही। नारा लेखन प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में भगाणी की पूजा प्रथम और निहालगढ़ की अमनदीप कौर द्वितीय तथा पांवटा की चांदनी शर्मा तश्तीय स्थान पर रही। कनिष्ठ वर्ग में पांवटा की नेहा प्रथम, भगाणी की रीना दूसरे तथा निहालगढ़ की रीना ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। चित्रकला के वरिष्ठ वर्ग में पांवटा की नम्रता प्रथम, पुरूवाला की पिंकी द्वितीय तथा निहालगढ़ की गुरजिन्द्र कौर तीसरे स्थान पर रही। कनिष्ठ वर्ग में निहालगढ़ की रूबी प्रथम, पांवटा की रीतु दूसरे तथा पुरूवाला की उषा तीसरे स्थान पर रही।

नाम परिवर्तन

मैं नागेश्वर सिंह सुपुत्र श्री बेली राम स्थायी निवासी गांव नौशा डाकघर उरला तहसील पद्दर जिला मंडी जन साधारण को सूचित करता हूं कि मैंने अपनी सुपुत्री कुमारी गुड्डी देवी आयु (13) वर्ष का नाम बदलकर नितिका रख लिा है। भविष्य में इसे इसी नाम से जाना जाए।

बीड़ में पैरा-ग्लाइडिंग लैंडिंग की सुविधा

प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा पैरा-ग्लाइडिंग के लिए विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल कांगड़ा घाटी के बीड़ में शीघ्र ही लैंडिंग स्थल के लिए भूमि का अधिग्रहण किया जाएगा। राज्य सरकार से इस संदर्भ में विभाग को स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

बीड़ में लैंडिंग स्थल के अधिग्रहण से बीड़ बिलिंग में पैरा-ग्लाइडिंग जैसी साहसिक खेलों को व्यापक रूप से बढ़ावा मिलेगा, जिससे घाटी में अन्तराष्ट्रीय स्तर के खेल आयोजन भी संभव हो सकेंगे।

बहुउद्देशीय सभागार का लोकार्पण

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला में विधायक श्री सुरेश भारद्वाज, प्रिंविसियल सिस्टर रोज़ जार्ज तथा सुपरियर सिस्टर आलमा अब्राहम की उपस्थिति में 'कॉन्वैंट ऑफ जीसस एण्ड मैरी' स्कूल के नवनिर्मित सेंट क्लॉडाइन थैवनेट बहुद्देशीय हॉल का लोकार्पण किया।

मुख्य मंत्री ने देश में आज़ादी से पूर्व तथा बाद विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में कॉन्वैंट मैनेजमैंट की सराहना करते हुए कहा कि संस्था ने विश्व भर में शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि संस्था के शिक्षक समुदाय द्वारा मिशनरी भावना से कार्य करने के परिणामस्वरूप संस्थान का नाम विश्व भर में विख्यात हुआ है तथा यहां के विद्यार्थियों ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल कर, संस्थान का नाम रोशन किया है। उन्होंने कहा कि स्कूल प्रबन्धन द्वारा सामुदायिक सौहार्द एवं धार्मिक सहिष्णुता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अन्य शिक्षण संस्थाओं के लिए भी प्रेरणास्रोत बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार स्कूल प्रबन्धन को हर प्रकार की सहायता उपलब्ध करवायेगी। इस अवसर पर उन्होंने स्कूल प्रबन्धन द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया। स्कूल की प्रधानाचार्य सिस्टर रोज़ली थॉमस ने बच्चों को बहुद्देशीय हॉल समर्पित करने के लिए मुख्य मंत्री का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर पाठशाला की छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

52.50 करोड़ का लाभांश

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल को गत दिनों शिमला में मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप तथा सतलुज जलविद्युत निगम लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक एवं अध्यक्ष, श्री एच.के. शर्मा द्वारा एस.जे.वी.एन.एल. के संयुक्त उपक्रम 1500 मैगवॉट जलविद्युत परियोजना का वर्ष 2008-09 के लाभांश की अंतिम किस्त का 52.50 करोड़ रुपये का ड्राफ्ट भेंट किया गया। मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर एस.जे.वी.एन.एल. के निदेशकमंडल का धन्यवाद किया तथा संस्थान द्वारा रिकार्ड विद्युत उत्पादन कर लाभांश अर्जित करने के लिए बधाई दी।

सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा को प्रोत्साहन

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार ने गत दिनों शिमला में कला एवं भाषा विभाग द्वारा गेयटी थियेटर में आयोजित राज्य स्तरीय 'राष्ट्र भाषा' पुरस्कार वितरण समारोह में राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में कार्य कर अन्य कर्मचारियों के लिए आदर्श स्थापित करने वाले सरकारी कर्मचारियों को सम्मानित किया। मुख्य मंत्री ने अधिकारी श्रेणी में पहला स्थान प्राप्त करने वाले हिमाचल प्रदेश सचिवालय में विधि विभाग में कार्यरत विधि अधिकारी श्री सत्यदेव शर्मा, दूसरा स्थान प्राप्त करने वाले ज़िला कोषाधिकारी, शिमला श्री पन्नालाल शर्मा तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले आबकारी एवं कराधान विभाग में सहायक नियन्त्रक श्री राकेश शर्मा को सम्मानित किया। सचिवालय स्तर पर अधीक्षक सामान्य प्रशासन, ई श्री भुवनेश्वर शर्मा ने प्रथम स्थान, स्वास्थ्य-सी में कार्यरत वरिष्ठ सहायक श्री सुशील कुमार ने दूसरा तथा टी.सी.पी. शाखा में कार्यरत कनिष्ठ सहायक श्री चन्द्र सिंह पायल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया जबकि हाउसिंग ब्रांच में कार्यरत वरिष्ठ सहायक श्री बसन्त लाल चौहान को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

निदेशालय स्तर पर निदेशालय, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में कार्यरत सुश्री सपना ठाकुर ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। पर्वतारोहण संस्थान मनाली के वरिष्ठ सहायक श्री चन्द्र देव शर्मा ने दूसरा तथा आई.जी.एम.सी. शिमला के लिपिक श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया जबकि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के कनिष्ठ सहायक श्री राजेन्द्र कुमार को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। निगम/ बोर्ड स्तर पर हिम ऊर्जा में सहायक लोक सम्पर्क अधिकारी श्री पन्ना लाल शर्मा ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। हि. प्र. राज्य नागरिक आपूर्ति निगम के लिपिक श्री किताब सिंह चौहान ने दूसरा तथा खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के लिपिक श्री लेकराम शर्मा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि हि. प्र. भूतपूर्व सैनिक कल्याण निगम हमीरपुर के कनिष्ठ सहायक श्री सुरजीत सिंह चौहान को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार सभी स्तरों पर हिन्दी भाषा को प्रोत्साहन प्रदान कर रही है तथा सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देकर सरकारी कार्यप्रणाली को प्रभावी तथा पारदर्शी बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के अधिकतर लोग हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करते हैं तथा कहा कि राष्ट्रीय एकता व अखंडता को बनाए रखने तथा लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने के लिए इसे और अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

प्रो. धूमल ने दूरदर्शन के स्वर्ण जयन्ती समारोह का भी उद्‌घाटन किया तथा दूरदर्शन द्वारा अपने अस्तित्व की अर्धशती पूरा करने पर अधिकारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि देश में बड़ी संख्या में न्यूज चैनलों के विस्तार के बावजूद दूरदर्शन ने अपने सभी प्रसारित कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों में अपनी विश्वसनीयता को बनाए रखा है। उन्होंने कहा कि आज लोग समाचार एवं सूचना की वास्तविकता के लिए दूरदर्शन पर अधिक विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा कि दूरदर्शन चैनल की पहुंच राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों तक है, जो लोगों को शिक्षित एवं जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विधायक श्री सुरेश भारद्वाज, हिमुडा के उपाध्यक्ष श्री गणेशदत्त भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

हिमाचल पुरस्कृत

(पृष्ठ एक का शेष) बिना किसी रुकावट से चलाया जा सके। प्रो. धूमल ने तीनों सत्रों में भाग लिया जिनकी अध्यक्षता केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शरद पवार, केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी ने की। इंडिया टुडे समूह के प्रधान संपादक श्री अरुण पुरी ने मुख्यमंत्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों का सम्मेलन में स्वागत करते हुए कहा कि वर्ष 2003 से समूह द्वारा निष्पक्ष रूप से यह सर्वेक्षण किया जा रहा है, जो पूरी तरह पारदर्शी एवं निष्पक्ष है। उन्होंने विभिन्न राज्यों को समूह द्वारा प्रदान किए गए पुरस्कारों की विस्तश्त जानकारी दी। समूह संपादक श्री प्रभु चावला ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

रोहडू क्षेत्र में सड़कों व पेयजल योजनाओं ...

(पृष्ठ एक का शेष) आवासीय सुविधा प्रदान करने की क्षमता वाले जनजातीय कन्या छात्रावास का लोकार्पण किया। उन्होंने इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्रों एवं प्रवक्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि इससे महाविद्यालय में छात्रों को श्रेष्ठ शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने पब्बर नदी के बाएं तट पर 9.15 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निर्मित होने वाले 115 मीटर लंबे 'डबल लेन' पुल की आधारशिला रखी, जिससे रोहडू नगर में वाहनों की आवाजाही को सुचारु बनाया जा सकेगा। इसके उपरांत, मुख्यमंत्री ने 3.95 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निर्मित होने वाली कैथली, बितीयानी, दुन्दना और ग्राम समूह पेयजल आपूर्ति योजना की भी आधारशिला रखी, जिससे घाटी के 33 गांवों की 7600 से अधिक जनसंख्या लाभान्वित होगी।

हि. प्र. राज्य सहकारी बैंक के अध्यक्ष श्री खुशी राम बालनाहटा ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया तथा रोहडू दौरे के दौरान घाटी में 16.32 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं आधारशिला रखने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने मुख्य मंत्री को क्षेत्र की विभिन्न विकास मांगों से अवगत करवाया तथा उनके शीघ्र समाधान का भी आग्रह किया।

राजकीय महाविद्यालय सीमा के प्रधानाचार्य श्री बी.आर. बिंटा ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया। इस अवसर पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती सरवीन चौधरी, सांसद श्री वीरेन्द्र कश्यप भी उपस्थित थे।

शांता कुमार ने दी मुख्य मंत्री को बधाई

सांसद एवं पूर्व मुख्य मंत्री तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री शांता कुमार ने देश की एक प्रख्यात पत्रिका द्वारा 'स्टेट ऑफ द स्टेट्स' सर्वेक्षण में हिमाचल प्रदेश को देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य घोषित करने तथा प्रदेश को सात सूचकों में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त करने के लिए मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल को बधाई दी है। श्री शांता कुमार ने मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल को लिखे एक पत्र में कहा कि उनके गतिशील नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश में भाजपा सरकार ने सभी क्षेत्रों में नये आयाम स्थापित किये हैं, जिसके परिणामस्वरूप आज हिमाचल न केवल पहाड़ी राज्यों का आदर्श बना है अपितु देश के बड़े राज्यों का आदर्श बनकर उभरा है। श्री शांता कुमार ने निवेश, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में हिमाचल को देश का अग्रणी राज्य चुने जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि ये सभी क्षेत्र आम आदमी से जुड़े हैं।

मंत्रिमण्डल के निर्णय

(पृष्ठ एक का शेष) मानदेय दिया जाएगा। मंत्रिमंडल ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं तथा आंगनबाड़ी सहायिकाओं की नियुक्ति के दिशा-निर्देशों में भी बदलाव को स्वीकृति प्रदान की है, ताकि भर्ती प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता बरती जाए तथा समाज के उपेक्षित वर्गों को व्यापक अवसर प्रदान किए जा सकें। मंत्रिमंडल ने रोगी कल्याण समितियों के माध्यम से अनुबंध आधार पर 64 दंत चिकित्सकों की भर्ती को भी स्वीकृति प्रदान की। मंत्रिमंडल ने नरेगा के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों के बेहतर कार्यान्वयन के लिए विभिन्न श्रेणियों के 87 कर्मचारियों को अनुबंध आधार पर संबद्ध करने पर भी अपनी सहमति दी। मंत्रिमण्डल ने शिमला ज़िला के गुम्मा में एग्रो इंडिया पैकेजिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड इकाई की मशीनरी को सभी औपचारिकताएं पूर्ण करने के पश्चात् ठिकाने लगाने को भी स्वीकृति दी।

समाज कल्याण योजनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में लागू करने पर बल

राज्यपाल श्रीमती प्रभा राव ने राज्य में विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में कार्यान्वित करने पर बल दिया ताकि अधिक से अधिक ज़रूरतमंद लोग लाभान्वित हो सकें। राज्यपाल गत दिनों शिमला में हिमाचल प्रदेश राज्य बाल कल्याण परिषद की कार्यकारी बैठक की अध्यक्षता करते हुए बोल रही थीं।

श्रीमती राव ने बाल कल्याण परिषद को वित्तीय तौर पर मजबूत बनाने के लिए संसाधनों के समुचित उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया ताकि और अधिक कल्याणकारी गतिविधियों को कार्यान्वित किया जा सके। उन्होंने कहा कि राज्य बाल कल्याण परिषद इस दिशा में बेहतर कार्य कर रहा है, बावजूद इसके सुधार की और आवश्यकता है।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य बाल कल्याण परिषद को हर संभव सहायता प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 144 क्रेचों के माध्यम से 2396 बच्चों को सुविधा प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार बाल कल्याण परिषद को उदार वित्तीय सहायता प्रदान करेगी तथा परिषद को भी स्वावलंबी बनने के प्रयास करने होंगे।

समाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती सरवीन चौधरी ने विभिन्न कल्याण गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। हि.प्र. राज्य बाल कल्याण परिषद की महासचिव श्रीमती ऋतु सेठी ने बैठक का संचालन किया।

कार्यकारी समिति ने परिषद की स्थायी समिति का पुनर्गठन भी किया, जिसमें महासचिव श्रीमती ऋतु सेठी को समन्वयक, जबकि अतिरिक्त/ संयुक्त/ उपनिदेशक समाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग श्रीमती विमला कश्यप, श्रीमती स्वर्णकांता एवं श्रीमती प्रतिभा कौशिक को सदस्य बनाया गया। समिति ने सिरमौर जिला की श्रीमती प्रतिभा कौशिक, शिमला की श्रीमती रेणु बालज़ी, बिलासपुर की श्रीमती नीरू वैद्य तथा शिमला की श्रीमती चन्द्रैक एवं सोलन जिला की श्रीमती ऋतु सेठी को भारतीय बाल कल्याण परिषद का आजीवन सदस्य बनाने के लिए उनके नामों की संस्तुति की।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला जिला के रोहड़ू में कैंथली-बितीयानी-दुन्दना पेयजल आपूर्ति योजना की आधारशिला रखते हुए।

244 करोड़ के 194 ग्रामीण सड़क निर्माण प्रस्तावों को स्वीकृति

लोक निर्माण मंत्री ठाकुर गुलाब सिंह ने गत दिनों शिमला में बताया कि मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल द्वारा केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. सी. पी. जोशी के साथ हाल ही में आयोजित बैठक तथा अन्य स्तरों पर निरंतर किए जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 250 से अधिक की आबादी वाले गांवों को सड़क मार्ग से जोड़ने के 194 प्रस्तावों को स्वीकृति दी है।

श्री ठाकुर ने कहा कि 243.97 करोड़ रुपये लागत की इन परियोजनाओं से 203 बस्तियों को सड़क सुविधा उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि राज्य में 2604 कल्वर्टों सहित

प्लास्टिक कचरे से पक्की होंगी सड़कें

609 कि.मी. लंबी सड़कों का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार वर्ष 2012 तक राज्य के 250 तथा इससे अधिक आबादी वाले गावों को सड़क मार्ग से जोड़ने के प्रति वचनबद्ध है। उन्होंने कहा कि विभाग ने पायलट योजना के आधार पर प्लास्टिक कचरे को तारकोल में मिलाकर सड़क को पक्का करने का कार्य आरंभ किया गया है, जिसमें एक लाख से भी अधिक प्लास्टिक थैलों का प्रयोग किया जाएगा। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों की एक अन्य बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में 83 सड़कों के निर्माण को सुनिश्चित बनाने के लिए वन विभाग को एन.पी. वी. (नेट प्रोड्यूस वैल्यु) के रूप में 15 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं।

अक्षम व्यक्तियों के कल्याण के लिए 12.59 करोड़

प्रदेश सरकार राज्य में विकलांग व्यक्तियों के कल्याण के प्रति वचनबद्ध है तथा इसके लिए चालू वित्त वर्ष के दौरान 12.59 करोड़ रुपये व्यय किये जा रहे हैं।

यह जानकारी गत दिनों शिमला में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती सरवीण चौधरी ने विकलांग व्यक्तियों के कल्याण हेतु गठित राज्य स्तरीय समन्वय समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए दी।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2008-09 में 88 व्यक्तियों को ऋणों पर 8.80 लाख रुपये का अनुदान उपलब्ध करवाया गया। प्रदेश में बैकलॉग भर्ती के तहत 1048 पद भरे गये हैं, जिसमें से वर्ष 2008-09 में 727 विकलांगों को सरकारी विभागों में रोजगार उपलब्ध करवाया गया।

जनजातीय छात्रावास का लोकार्पण

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों राजकीय महाविद्यालय कुल्लू में 1.94 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित जनजातीय छात्रावास का लोकार्पण किया। ढालपुर मैदान में एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए प्रो. धूमल ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में व्यापारीकरण को किसी भी कीमत पर सहन नहीं किया जाएगा तथा प्रदेश के छात्रों को बेहतर शिक्षा उपलब्ध करवायी जाएगी। उन्होंने कहा कि विभिन्न शिक्षण संस्थानों में प्रतिस्पर्धा की भावना सृजित करने के उद्देश्य से निजी भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध हो सके। उन्होंने कहा कि कॉलेज परिसर में शीघ्र महाविद्यालय केन्द्र एवं प्रशासनिक खंड का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए कॉलेज के विद्यार्थियों को 25 हजार रुपये देने की घोषणा की। प्रो. धूमल ने कहा कि कुल्लू घाटी में विभिन्न विकास परियोजनाओं के अंतर्गत नाबार्ड के तहत 18 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। उन्होंने वर्षा के कारण प्रभावित सड़कों की मुरम्मत करने के भी निर्देश दिए। विधायक एवं राज्य भाजपा अध्यक्ष पं. खिमी राम ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश द्वारा अर्जित उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई दी।

विधायक श्री गोबिन्द ठाकुर ने भी मुख्य मंत्री का स्वागत किया तथा गत दिनों प्रदेश द्वारा 'इंडिया टुडे' सम्मेलन में नई दिल्ली में 7 प्रतिष्ठित पुरस्कार जीतने के लिए उन्हें बधाई दी। उन्होंने कुल्लू बाईपास के निर्माण के लिए धनराशि प्रदान करने तथा लालचंद प्रार्थी सभागार के लिए 50 लाख रुपये प्रदान करने के लिए मुख्य मंत्री का आभार व्यक्त किया।

विधायक श्री किशोरी लाल सागर, पूर्व मंत्री श्री कुंज लाल ठाकुर, पूर्व सांसद श्री महेश्वर सिंह भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

टिक्कर में खुलेगी आईटीआई

बागबानी एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा ने गत दिनों रोहड़ू क्षेत्र के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला टिक्कर में 65 लाख की लागत से निर्मित विज्ञान भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि टिक्कर क्षेत्र में जल्द ही आईटीआई खोली जायेगी। उन्होंने अधिकारियों को आदेश दिये कि वे इस संस्थान के लिये उचित स्थान का चयन करें। उन्होंने कहा कि किसानों के हितों को सुरक्षित बनाने के लिए बागबानी तकनीकी मिशन के तहत 80 करोड़ रुपये उपलब्ध करवाये गये हैं।

सहकारी बैंक के अध्यक्ष श्री खुशी राम बालनाहटा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सप्ताह में तीन दिन जन शिकायतों को निपटायेंगे पटवारी

प्रदेश सरकार ने निर्णय लिया है कि सभी पटवारी प्रत्येक सोमवार, बुधवार तथा शुक्रवार को जन शिकायतों को निपटायेंगे तथा यदि आवश्यक हुआ तो लोगों को राजस्व रिकार्ड भी उपलब्ध करवायेंगे। यह जानकारी मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला के समीप मशोबरा में 6.24 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थान के नये भवन की आधारशिला रखने के उपरांत एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए दी। इसे एक वर्ष के भीतर पूरा कर दिया जाएगा।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत में पंचायत भवनों के निर्माण पर 10.20 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं तथा प्रत्येक ग्राम पंचायत को इसके लिए 3.40 लाख रुपये प्रदान किये जाएंगे। उन्होंने कहा कि 630 ग्राम पंचायतों के भवनों को स्तरोन्नत करने का कार्य 6.30 करोड़ रुपये की लागत से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पंचायत सहायकों के मासिक मानदेय को 3120 रुपये से बढ़ाकर 4860 रुपये किया गया है तथा आठ वर्ष का सेवाकाल पूरा कर चुके 260 पंचायत सहायकों को पुन: पंचायत सचिव का पदनाम दिया गया है। प्रो. धूमल ने कहा कि पंचायती राज संस्थानों को न केवल विकास एवं कल्याण परियोजनाओं को कार्यान्वित करने का उत्तरदायित्त्व सौंपा गया है,

6.24 करोड़ रुपये की लागत से बनेगा पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थान

बल्कि उन्हें विभिन्न वित्तीय एवं न्यायिक शक्तियां प्रदान की गई हैं, ताकि उन्हें और सशक्त बनाया जा सके। उन्होंने केन्द्र तथा प्रदेश स्तर के सभी कार्यक्रमों एवं नीतियों में ग्रामीण क्षेत्रों को प्रमुख केन्द्र बनाए रखने पर बल दिया ताकि समस्त देश विकास पथ पर अग्रसर हो सके।

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार पंचायती राज संस्थाओं के पदाधिकारियों को पदोन्नति के समुचित अवसर प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि तकनीकी सहायकों को कनिष्ठ अभियंता के रूप में पदोन्नत किया जा रहा है तथा जिला मुख्यालय में सरकारी कार्य से आने वाले पंचायती राज पदाधिकारियों को यात्रा भत्ता एवं विश्राम गृह में आवासीय सुविधा जैसे विभिन्न प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं।

मुख्य मंत्री ने पंचायती राज संस्थाओं के पदाधिकारियों का आह्वान किया कि वे कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए प्रदेश सरकार को पूर्ण सहयोग दें। उन्होंने कहा कि जो लोग कन्या भ्रूण हत्या बारे जानकारी उपलब्ध करवायेगा, उसे पुरस्कृत किया जाएगा तथा उसकी पहचान गोपनीय रखी जाएगी। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की सामाजिक कुरीति को दूर करने में पंचायती राज पदाधिकारी सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री जयराम ठाकुर ने कहा कि नया प्रशिक्षण संस्थान परिसर सभी प्रकार से सक्षम होगा जहां पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

श्री ठाकुर ने कहा कि नरेगा के अंतर्गत ग्राम पंचायतों के माध्यम से 352 करोड़ रुपये व्यय किए जा चुके हैं तथा वर्तमान वित्त वर्ष के दौरान 500 करोड़ रुपये व्यय करने का लक्ष्य रखा गया है। सांसद श्री वीरेन्द्र कश्यप ने ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधियों के नियमित प्रशिक्षण एवं विभिन्न विकास एवं कल्याण योजनाओं बारे जागरूक बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रधान सचिव ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज डॉ. श्रीकांत बाल्दी ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया तथा इस भव्य प्रशिक्षण परियोजना की आधारशिला रखने के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर विधायक श्री सुरेश भारद्वाज एवं श्री सोहन लाल, पूर्व विधायक श्री आर.डी. कश्यप एवं श्री भगतराम तथा प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

सूचना प्रौद्योगिकी पार्क वाकनाघाट में मिलेगा दस हजार को रोजगार

सूचना एवं प्रौद्योगिक विभाग सोलन जिला के वाकनाघाट गांव (मौजा मझौल) में सूचना प्रौद्योगिकी पार्क एवं टाउनशिप का विकास करने जा रहा है। यह पार्क लगभग 462 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निर्मित होगा और 64.73 एकड़ क्षेत्र में फैला होगा। परियोजना का मुख्य उद्देश्य एक स्थान पर सूचना प्रौद्योगिकी सम्बन्धित सभी सेवाएं उपलब्ध करवाने तथा सार्वजनिक-निजी भागीदारी के आधार पर आवासीय एवं वाणिज्यिक सामाजिक अधोसंरचना विकसित करना है।

यह जानकारी गत दिनों शिमला में प्रधान सचिव सूचना प्रौद्योगिकी श्री बी. के. अग्रवाल ने देते हुए कहा कि प्रदेश सरकार ने इस पार्क की स्थापना के लिए पहले ही वैश्विक निविदाएं आमंत्रित की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा इस पार्क को शीघ्रातिशीघ्र विकसित किया जा रहा है। क्योंकि इससे लगभग 10 हजार लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होने के साथ-साथ प्रदेश की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी।

idk'kd% ch-Mh- 'kek] fun'kd] lpuk ,o tu lEidZ foHkkx] fg-iz- f'keyk&171002] eqnzd% jktho dqekj 'kdj] fu;=d] eqnz.k rFkk ys[ku lkexzh foHkkx] f'keyk&171005] Qksu% 2830378] iz/kku lEiknd% ch-Mh- 'kek] ofj"B lEiknd% vkj-,l- uxh] lEiknd% ;knfoUnj flag pkSgku] dk;kZy;% fg-iz- eqnz.kky;] ifjlj] f'keyk&171005] Qksu o QSDl% 2633145] bZ&esy% girirajhp@gmail.com., girirajhp@yahoo.co.in OR girirajweekly 1978 @yahoo.co. in ikfLr LFkku% fxfjjkt dk;kZy;A ¼fxfjjkt lkIrkfgd esa izdkf'kr ys[kksa esa 0;Dr fopkjksa ls lEiknd dh ;g lgefr vfuok;Z ugha½